ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

जनवरी–2019

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा

ब्रह्मन् सुराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी।।

देशभक्ति, राष्ट्रीयता व अन्तर्राष्ट्रीयता

आजाद भारत में आजादी के देवताओं का अपमान

जेएनयू में राष्ट्रवाद की वीणा

प्रकाशन का 20वां वर्ष

₹10

Re-establishment of Arya Samaj missionary work at Ponnani, Malappuram District of Kerala

आर्यजगत के गौरव वयोवृद्ध आर्यसमाजी चौधरी बदलूराम आर्य मुकलान को सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग हरियाणा द्वारा राज्यस्तरीय वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह में शतवर्षीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

आर्यसमाज पेज facebook-com/arya.samaj के एडमिन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डा० विवेक आर्य को उनकी सोशल मीडिया एवं लेखन के लिए सम्मानित किया

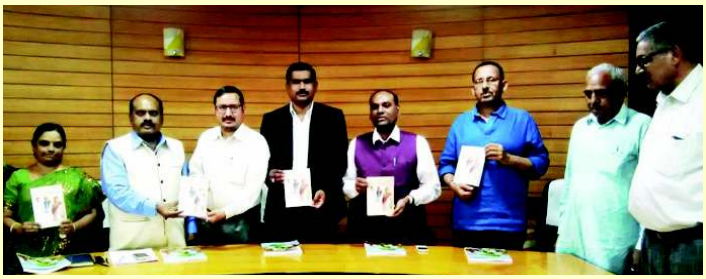

डॉ० लता पाटिल एवं डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट द्वारा सम्पादित पुस्तक 'महिला एवं बाल विकास : दशा एवं दिशा' पुस्तक का विमोचन उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, धारवाड़ (कर्नाटक) में किया गया।

पर्यावरण विद् एवं समाज सेवी मा० केवल सिंह जुलानी को जीन्द में आर्य समाज द्वारा सम्मानित किया गया

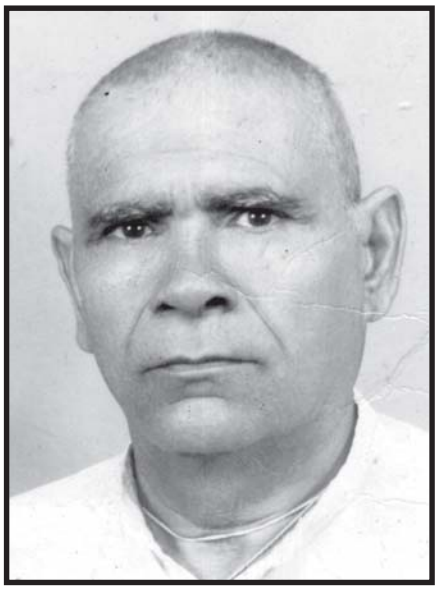

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : सहदेव समर्पित

(चलभाष **09416253826**)

उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री

प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण

आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य

सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा

डॉ० विवेक आर्य

विधि परामर्शक : डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट

सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

श्रीपाल आर्य, बागपत

महेश सोनी, बीकानेर

भलेराम आर्य, सांघी

कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी

कार्यालय व्यवस्थापकः रविन्द्रकुमार आर्य

कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु०
वार्षिक	:	१२०.०० रु०
दस वर्ष	:	१०००.०० रु०

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

जनवरी, २०१६ ई०

वर्ष : २० अंक : १२ पौष २०७५ विक्रमी

स ष्टि संवत्-१६६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १६५

क्या? कहाँ?....

आलेख

सामवेद अनुशीलन (स्वाध्याय) ६

प्रतीकों का विवाद (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७

देशभक्ति, राष्ट्रीयता व अन्तर्राष्ट्रीयता (राष्ट्र-चिन्तन) ६

जेएनयू में राष्ट्रवाद की वीणा ११

सत्य और न्याय के पक्षधर : ईश्वरभक्त सुकरात १४

नारी : पिता की सम्पत्ति पर अधिकार (मनुस्मृति) १६

आजाद भारत में आजादी के देवताओं का अपमान १८

तीन ऋणों को उतारने का व्रतबंधन : यज्ञोपवीत २०

जीवन का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने के उपाय (आत्मि उन्नति) २२

डिप्रैशन या अवसाद क्या है? (स्वास्थ्य चर्चा) २४

जब नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जियाउद्दीन बने २७

कविता : ८, २८

स्तम्भ : बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८, बिन्दु बिन्दु विचार-३४

साथ में : गुरुत्त्वाकर्षण के आविष्कारक न्यूटन नहीं, समाचार/सूचनायें

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, पो बाक्स नं० 19

मुख्य डाकघर जींद 126102

७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द–१२६१०२ (हरि०)

दूरभाष : ६४१६२–५३८२६

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

जीवन की राजनीति

❒सहदेव समर्पित

बीस वर्ष पहले जब इस पत्रिका शांतिधर्मी को शुरु किया गया था, तो मुझे पिताजी (स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य, संस्थापक) का यह प्रक्रम बहुत उपयोगी लगा और मैंने यथाशक्ति इसमें अधिकाधिक सहभागिता करनी प्रारम्भ कर दी। सम्पर्क के क्रम में एक मित्र से भेंट हुई। उसने एक सहज सा प्रश्न किया- इस पत्रिका की विषयवस्तु क्या रहेगी? मैंने उत्तर दिया- राजनीति को छोड़कर मनुष्य के जीवन की सार्थकता के जितने भी विषय हैं, उनको समाहित रखने का विचार है। उन्होंने तीखा प्रतिप्रश्न किया- आज के जमाने में ऐसा कोई व्यक्ति है जो राजनैतिक न हो? मैं एकदम से कोई उत्तर नहीं दे सका। कुछ सोचकर मैंने कहा- यह सच है कि सभी व्यक्ति राजनैतिक हैं, पर यह भी सच है कि यह उनका वास्तविक जीवन नहीं होता। और इससे भी बड़ा सच यह है कि हर व्यक्ति के जीवन में २४ घंटे में ऐसे कुछ क्षण अवश्य होते हैं, जब वह राजनैतिक नहीं होता और वही उसका वास्तविक जीवन होता है। हम उसी वास्तविक जीवन की कड़ियों को जोड़ने के लिए पूर्वजों के श्रेष्ठ चिन्तन को पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। वह मित्र तो संतुष्ट हो गए लेकिन जैसे जैसे हम अपने समाज का अवलोकन करते हैं तो हमें लगता है कि व्यक्ति के जीवन से वे क्षण समाप्त या लुप्त होते जा रहे हैं, जब वह अपने वास्तविक सन्दर्भ में होता है। राजनीति ने मनुष्य के वे सुहाने पल विलुप्त कर दिये हैं जब वह अपने मानव होने की अनुभूति कर सकता है और अपने इस दुर्लभ जीवन का आनन्द उठा सकता है।

क्षमा कीजिये, राजनीति एक पवित्र शब्द है। इसका अर्थ तो और भी अधिक सारगर्भित है। अन्य शब्दों के साथ-साथ इसका भी भयंकर अवमूल्यन हुआ है। राजनीति को तो हमारे पूर्वजों ने राजधर्म कहा है। पर आज के अर्थों में यह किसी भी प्रकार से सत्ता और शक्ति प्राप्त करने और उसे बनाये रखने के साधन के रूप में प्रचलित है। लेकिन मैं इसके इस अर्थ में भी इसका प्रयोग नहीं कर रहा हूँ। मैं तो इस शब्द का उस अर्थ में प्रयोग कर रहा हूँ जो मनुष्य के निजी और सामाजिक जीवन में घर कर गई है और इसने मनुष्य होने के वास्तविक आनन्द को हमसे छीन लिया है। हम अपने सामाजिक जीवन में ही नहीं, पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में भी जाने अनजाने पोलिटिक्स खेलते हैं और अपने आप से बहुत दूर होते जा रहे हैं। मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि वह जो है वह दिखना नहीं चाहता और जो वह नहीं है, वह दिखने का प्रयास करता रहता है। यदि मनुष्य अपनी यथार्थ स्थिति को जाने और माने तो तभी तो वह उस स्थिति से ऊँचा उठने का प्रयास कर सकता है। जैसे कोई व्यक्ति वास्तव में धनी न होते हुए भी अपने आपको धनी दिखाने का प्रयास करता है, दूसरे उसको धनी समझने भी लगते हैं। पर दूसरों को धोखा देते देते उसकी स्वयं की धारणा भी यही हो जाती है। जब वह अपने आप को निर्धन होते हुए भी धनवान समझता ही है तो उसे धन कमाने के लिये प्रयास और पुरुषार्थ करने की क्या आवश्यकता है! यह समझने और होने का अन्तर उसे कन्फ्यूज कर देता है। यही बात भक्ति के संबंध में सोची जा सकती है। भक्त होने का अर्थ बस इतना सा नहीं है कि आपने कितनी बार नाम लिया और कितनी बार जागरण करवाये। इसका अर्थ तो यह है कि भक्ति आपके जीवन में कितनी आई।

एक पढ़े लिखे मित्र ने कहा- कई बार बाला जी (कोई और भी हो सकता है।) जाने को कह लिया, जा नहीं पाये। सब कुछ उल्टा पुल्टा हो रहा है। अब की बार तो जरूर जायेंगे। इसको मात्र अज्ञान या अंधविश्वास कह देना पर्याप्त नहीं होगा। यह सीधी सीधी पोलिटिक्स है। सौदेबाजी! वहाँ जायेंगे तो वह खुश हो जायेगा। नहीं जायेंगे तो उल्टा पुल्टा कर देगा। भक्ति से जो सहनशीलता, धैर्य, समस्याओं से लड़ने का आत्मिक बल, साहस, आत्मविश्वास, पवित्रता और सरलता आदि अमूल्य सम्पत्ति मिलती है, भक्त उनके मूल्य को नहीं समझता, तो फिर उनको प्राप्त करने का प्रयास भी नहीं करता।

व्यक्तिगत जीवन में 'राजनीति' का एक उदाहरण और! बड़े बड़े नामी स्कूलों के संचालक मित्र, जो संस्कारों का भी रोना रोते हैं, गत दिनों छोटे छोटे बच्चों को सांताक्लाज बनाकर उनको ईसाई मत का महत्त्व बता रहे थे। (यह काम तो मिशनरीज- दूर दराज के इलाकों में ही नहीं, आपके अपने शहर में भी कर ही न रही हैं।) और वे चाहते हैं कि उनके बच्चे गुरु गोविन्दसिंह और उनके परिवार, वीर गोकुला, महाराजा सूरजमल, स्वामी श्रद्धानन्द के अनुयायी बनें? वे जानते हैं, पर वास्तविकता के प्रति गंभीर नहीं हैं।

यदि हम अपने 'गैर राजनैतिक क्षणों' में विचार कर सकें तो जीवन की वास्तविकता को समझ सकते हैं।

आपकी सम्मतियाँ

आज ही भेज दें मांग विशेष

शांतिधर्मी को घर मंगवाले।
पास पड़ौस में इसे पढ़ाले।।
जब जब यह पढ़ने को मिलेगी,
ज्ञान पिपासा बढ़ने लगेगी।।
जिस घर पर यह दस्तक देगी,
नित्य पढ़ूँ ऐसे विवश करेगी।
पढ़कर होंगी सन्तान संस्कारवान्।
फिर देखना इसके चमत्कार।
ऋषिवर देव दयानन्द को जो भी पढेगा।
स्वाध्याय की ओर बढेगा।
सद्ग्रंथों का है इसमें सार,
स्वस्थ मनोरंजन है भरपूर।
पाखण्डों से बिल्कुल दूर।।
अश्लीलता का काम नहीं है,
आप्त पुरुष देते सन्देश।
तत्त्ववेत्ता यदि बनना चाहें,
आज ही भेज दें मांग विशेष।।

–ईश्वरार्य प्र० अ०
ग्राम पोस्ट मस्तापुर, जि० रेवाड़ी–१२३४०१

आपकी पत्रिका एक मित्र के यहाँ पढ़ने का सौभाग्य मिला। पत्रिका की जितनी प्रशंसा की जाये कम है। डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' का लेख 'पर्यावरण और विधि' पढ़ा अच्छा लगा। इसलिए लेखक को साधुवाद देता हूँ। डॉ० मनोहरदास अग्रावत का पानी के संबंध में लेख सबके लिये उपयोगी है। आशा है भविष्य में भी अन्य उपयोगी लेख पत्रिका में भेजकर आर्य बन्धुओं को लाभ पहुँचायेंगे। पत्रिका के २१ वें वर्ष के प्रकाशन पर अनेकों बधाई, पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना सहित।

मुंशी राजेन्द्र चायल (निनाण वाले)
जिला न्यायालय, भिवानी–१२७०२१ (हरि०)

शांतिधर्मी के दिसम्बर अंक का आद्योपान्त अवलोकन किया। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के परिप्रेक्ष्य में धमान्तरण और राष्ट्र विषय पर विचारपरक जानकारी दी गई है। हमें इस खतरे को समाझना होगा। पानी के औषधीय गुणें के बारे में सर्वथा नवीन जानकारी है। चौधरी शीशराम जैसे पुराने नेताओं के संस्मरण पढ़कर बहुत अच्छा लगा। उन्होंने वास्तव में समाज को ऊँचा उठाने का कार्य किया। डॉ० विवेक आर्य का 'अन्धकार से प्रकाश की ओर' लघुलेख सारगर्भित है। सम्पादकीय आत्मचिन्तन में 'जीवन की कमाई' तो जैसे पूरी पत्रिका का सार है। सुन्दर अंक के लिए साधुवाद स्वीकार करें।

बंशीलाल चावला,
झोझू कलां, भिवानी–१२७०२१

शांतिधर्मी का दिसंबर २०१८ अंक प्राप्त हुआ। आत्मनिवेदन 'जीवन की कमाई' आध्यात्मिकता को दरकिनार कर अपना सारा जीवन पैसा इकट्ठा करने में लगाने वालों को सचेत करने वाला है। आपने ठीक कहा है कि आध्यात्मिकता भौतिक विकास पर अंकुश लगाती है। जब विकास की अंधी दौड़ शुरू हो जाए तो जीवन का उद्देश्य पैसा–पैसा और हाय पैसा बन कर रह जाता है। एक गरीब आदमी रूखी–सूखी खाकर परमात्मा का शुक्र करता है, वह ज्यादा सुखी है। वह परमात्मा को सदा याद करता है, ईश्वरीय शक्ति से डरता है, दूसरों के हित की सोचता है। लेकिन जो लोग कमाई की अंधी दौड़ में लगे हुए हैं, उन्हें शांति नहीं मिलती। बेशक पैसा हमारी जरूरतों को पूरा करता है लेकिन एक सीमा से ज्यादा पैसा होना बहुत सारी बुराइयों को पैदा करता है। मैं सुबह रोज परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हे परमात्मा, बहुत कुछ मत देना, जितना मुझे चाहिए उससे थोड़ा सा ज्यादा देना। इससे भी पहले मन की शांति, अच्छा स्वास्थ्य, सद्बुद्धि, परिवारिक सुख–शांति, सच्चाई तथा ईमानदारी देना। आजकल कुछ साधु–संत भी धार्मिकता का चोला पहनकर धन एकत्र करने में लगे हुए हैं, उनके विचार धार्मिकता से मेल नहीं खाते। गुरु नानकजी को माता पिता ने कुछ रुपए देकर व्यापार करने के लिए भेजा। गुरु नानक उन रुपयों को सच्चे सौदे में ही खर्च करके आ गए अर्थात् दु:खी, साधु–संतों को पेटभर भोजन खिलाकर पुण्य कमाया। हमें भी चाहिए कि हम अपना कुछ पैसा परहित के लिए खर्च करें। डॉ० विवेक आर्य का देख 'अंधकार से प्रकाश की ओर' शिक्षाप्रद और ज्ञान वर्धक है। स्व० पंडित चंद्रभानु आर्य का शांतिप्रवाह 'इस देश का आदर्श क्या है?' जानकारी बढ़ाने वाला है। वैद्य राजेंद्र आर्य का लेख भी पसंद आया। अंकुर आनंद की कविता 'समलैंगिकता रोग भयंकर' इस घृणास्पद प्रवृत्ति पर प्रहार करती है।

प्रो० शामलाल कौशल (94163 59045)
975 बी, ग्रीन रोड, रोहतक–१२४ ००१ (हरि०)

स्वाध्याय

-लेखकः पं० चमूपति

प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम्।
अग्निं सूक्तेर्भिवचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य इन्धते।

ऋषि- कण्व- मेधावी।

(देवयतीनां) देवता बनाकर पूजने वाली (पुरूणाम्) बहुसंख्य (विशाम्) प्रजाओं के (वः) तुझ (यह्वम्) महान्-पूज्य (अग्निं) अग्नि देव को (सूक्तेभिः) भली प्रकार उच्चारण किए गए (वचोभिः) वेद-वचनों से (प्रवृणीमहे) हम वरण करते हैं-उस अग्निदेव को (यम्) जिसे (अन्ये) अन्य लोग (इत्) भी (समिन्धते) प्रदीप्त कर रहे हैं।

हम आर्य हैं। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना, सुनाना हमारा परम धर्म है। हम उस परम धर्म का पालन कर रहे हैं। वेद-वाणी का पाठ हम नित्य-प्रति करते हैं। खूब गा-गाकर मंत्रों का उच्चारण करते हैं। उनमें आए पदों का, सन्धियों का, छन्दों का ध्यान रखते हैं। हम मंत्रों के भावों में पैठ जाते हैं और भावना पूर्वक उनका गान करते हैं। मंत्रों की परस्पर संगति को स्मरण रखते हुए संपूर्ण सूक्तों के तात्पर्य को मनन तथा निदिध्यासन का विषय बनाते हैं। आज हमारे समूचे आचरण का आधार वेद है-ईश्वरोक्त वेद, ऋषियों द्वारा दृष्ट तथा प्रोक्त वेद। इस वेद का ठीक उच्चारण वही है जो केवल वाणी-द्वारा ही नहीं, किन्तु मानसिक, वाचिक, कायिक-तीनों प्रकार के क्रियाकलाप द्वारा अनुष्ठान ही को जबान बनाकर किया जाय। हमारी भाषा सूक्त भली प्रकार कही गई--तभी बनती है जब उसका प्रवचन हमारे शरीर का अणु-अणु कर रहा हो।

वेद के इस स्वाध्याय द्वारा हम अग्नि-देव का आह्वान करते हैं। मनुष्य पूजा-शील है। मानव-जाति में संभव है, कोई विरला व्यक्ति भी हो जो किसी देव की आराधना न करता हो। अधिक संख्या ऐसे ही मनुष्यों की है जिनके स्वभाव में पूजा है। कोई देश को, कोई जाति को, कोई धर्म को देव बनाकर पूज रहा है। कोई बिना सम्बन्धी का ही पुजारी है। किसी की श्रद्धा गुरु में हो, किसी की माता-पिता में, किसी की किसी बात में। श्रद्धा से खाली कोई इक्का-दुक्का ही हो तो हो। भक्ति मानव-जीवन का रस है, सार है। मनुष्य भक्त इसलिए है कि वह मनुष्य है। उसे देव बनना है, इसलिए उसकी पूजा का पात्र कोई देव होना ही चाहिए।

हमारी भक्ति का भाजन अग्नि-देव है। वह देवों का अग्रणी है। जिन मनुष्यों को आगे जाना है, जिन्हें विकास अभीष्ट है, उन्हें अग्नि ही की उपासना करनी चाहिए। अग्नि-देव फूल की तरह खिल रहा है। हमेशा ऊपर ही ऊपर चढ़ रहा है। संपूर्ण विश्व के जीवन का आधार है। अन्य देव यज्ञ करते हैं परन्तु प्रत्येक यज्ञ का होता-अन्य देवों को बुलाने वाला और उनसे यज्ञ कराने वाला-अग्निदेव ही है। देव लेते हैं देने के लिए। अग्नि देवताओं को दे रहा है। यह देव देवों का देव है।

अग्नि देव की उपासना केवल हमीं नहीं कर रहे। अन्य लोग भी जाने, अनजाने में अग्नि ही की उपासना करते हैं। हर एक ने अपनी अलग अलख जगाई है। कोई देशाग्नि को, कोई धर्माग्नि को, कोई वंशाग्नि को प्रदीप्त कर रहा है। सर्वत्र समुदायों में काम कर रहा है। हर जगह सहयोग का राज्य है। कोई व्यक्ति अकेला नहीं। प्रत्येक स्थान में देव-पूजा है, संगतिकरण है, दान है। अपने से बड़े में देव-भावना है, समानों में सखित्व का भाव है, छोटों के लिए दान की वृत्ति है। एक शब्द में यह विश्व यज्ञागार है। चप्पे-चप्पे पर यज्ञ हो रहा है। मनुष्यों में, पशुओं में, वनस्पतियों में, ईंटों और पत्थरों में यज्ञ है। ग्रह-उपग्रह यज्ञ रह रहे हैं। अग्नि की उपासना यज्ञ ही का दूसरा नाम है।

यज्ञाग्नि को क्रिया रूप में प्रदीप्त तो सभी कर रहे हैं, पर मंत्र पाठ हम मनुष्यों के हिस्से आया है। अलख जगी तो द्वार-द्वार पर है, पर उसकी पुकार अकेला मनुष्य ही करता है। वेद का अनुसरण तो समूचा चराचर जगत् कर रहा है, परन्तु वेद का श्रवण और मनन मननशील मनुष्य ही की करामात है।

तो हे मेरे आर्य मन! आ! तू मंत्रों का मनन-पूर्वक आचरण कर। तू वेदाग्नि को प्रदीप्त कर, प्रदीप्त कर। मनसा, वाचा, कर्मणा वेद का प्रचार-वेदाग्नि का प्रसार कर। यही तेरा यज्ञ है। स्वाध्याय से उत्तम और यज्ञ कौन-सा है? आत्मा का अध्ययन कर। उसमें वेद की आग जला, यज्ञ की आग भड़का। जो आग अनजाने में भड़क रही है, उसका ज्ञान प्राप्त कर, उसे ज्ञानाग्नि से और अधिक चमका।

स्वाध्याय से उत्तम और यज्ञ कौन-सा है? आत्मा का अध्ययन कर। उसमें वेद की आग जला, यज्ञ की आग भड़का। जो आग अनजाने में भड़क रही है, उसका ज्ञान प्राप्त कर, उसे ज्ञानाग्नि से और अधिक चमका।

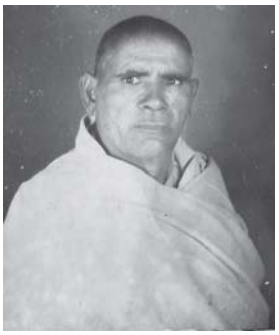

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन मई २००६ अंक का सम्पादकीय

प्रतीकों का विवाद

❑**स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक,** संस्थापक शांतिधर्मी

संसार में जो प्रतीक या चिह्न में धर्म माना जाएगा, तो वह सार्वभौमिक व सार्वकालिक धर्म नहीं हो सकता। धर्म व्यवहार व आचरण करने का धारण करने का नाम है, जो सब कालों में, सब देशों में, सब मनुष्यों द्वारा किया जा सकता है।

पिछले काफी दिनों से एक विवाद धार्मिक आस्थाओं को ठेस पहुंचाने का चल रहा है। फ्रांस में सिखों की पगड़ी का विवाद, चित्रकार हुसैन द्वारा बनाए गए हिन्दु देवी देवताओं के चित्रों का विवाद और अब डेनमार्क में मुहम्मद पैगम्बर के चित्रों/कार्टूनों का विवाद। इन मामलों को लेकर बड़े बड़े प्रदर्शन हुए, अनियंत्रित बयानबाजियाँ हुईं। करोड़ों की सम्पत्ति का विनाश हुआ। मनुष्य समाज में कटुता बढ़ी और जिस धर्म के लिए यह सब हुआ, उसके स्वरूप की छवि धूमिल हुई। इससे यह भी ध्वनित हुआ कि आज भी संसार के अधिकांश लोगों के लिए धर्म एक स्थूल दृश्यमान वस्तु है। धर्म प्रतीकों पर केन्द्रित है और प्रतीकों का इस्तेमाल एक दूसरे की भावनाओं पर ठेस पहुंचाने के लिए अपनाया जा सकने वाला सबसे सरल तरीका है।

इस्लामी काल में हिन्दुओं के विशाल मन्दिर उनके मनोबल को गिराने के लिए तोड़े गए। गोवा आदि में ईसाईयों द्वारा जो अत्याचार किए गए वे इसी क्रम का हिस्सा हैं। वे अब इतिहास की घटनाएँ बन चुके हैं, लेकिन ऐसा नहीं लगता कि मानव समाज की मनोवृत्ति में कोई अन्तर आया है। आक्रमणकारियों ने उन मूर्त्तियों को इसलिए तोड़ा क्योंकि वे लागों की आस्था की केन्द्र बन गई थी। गोवा में भी ईसाईयों ने मूर्त्तियों को धूलि धूसरित इसीलिए किया क्योंकि उन्हें लोगों के विश्वास को हिलाना था। आस्था के केन्द्र व्यक्ति एक आशा लेकर बनाता है। बुद्धिजीवियों की इस प्रकरण में एकांगी प्रतिक्रिया ही आती है, कि यह भावनाओं का अपमान उचित नहीं है। यह सत्य है कि यह अलोकतांत्रिक है, असंसदीय है, निन्द्य है, लेकिन ये आस्था के केन्द्र क्या सत्य हैं? क्या धर्म या भावनाएँ पगड़ी, चोटी, पैगम्बर तक ही सीमित हैं या इसका कोई और अर्थ भी है? धर्म का वास्तविक अवमूल्यन तो यह है कि उसे व्यवहार से निकालकर प्रतीकों में स्थापित कर दिया। पांच ककार गुरु गोविन्द सिंह ने स्थापित किए, उससे पहले जो जो सिख हुए क्या वे सिख नहीं थे? क्या पांच ककारों को न धारण करने वाला, जो गुरुओं के वचनों का पालन करता है, वह सच्चा सिख नहीं हो सकता? मुहम्मद पैगम्बर के कार्टूनों से जिस धर्म का अपमान हो गया, क्या वे मुहम्मद के असली चित्र थे? क्या इस्लाम का अपमान निर्दोषों की संपत्तियाँ जलाने से नहीं हुआ? क्या सर्वशक्तिमान् सृष्टिकर्त्ता खुदा के मामलों में किसी को शरीक मानने में धर्म (मजहब) का अवमूल्यन नहीं होता है? क्या नारियों को अपने अधिकारों से वंचित करने से आस्थाओं पर चोट नहीं पहुंचती! क्या निरपराध लोगों के खून बहाना--आस्था का सम्मान है? ये प्रश्न हैं जो प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति के मन में उठने चाहिएँ और उसे इनका जवाब चाहिए। जब तक इन सवालों का समाधान नहीं निकलता- तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि मानव समाज ने प्रगति कर ली है या उसके विचार तथाकथित जंगलीपन से ऊपर उठ गए हैं।

अनेक बुद्धिजीवियों की प्रतिक्रिया इसी पर केन्द्रित रही कि आस्थाओं का अपमान नहीं होना चाहिए, यह एक मानवतावादी दृष्टिकोण है और इससे उनकी उदारता झलकती है। लेकिन हमें इससे भी थोड़ा ऊपर उठकर सोचना होगा कि जो लोग आस्था का नाम लेकर, धर्म के अपमान का नाम लेकर जनभावनाओं को भड़काते हैं, क्या उनका उद्देश्य यह है कि लोग धर्म के प्रति आस्थावान् बनें, या सच्चे अर्थों में धार्मिक बनें? वास्तव में ऐसे धर्म के ठेकेदार धर्म का अवमूल्यन करते हैं। वे चाहते हों या न चाहते हों किन्तु उनके कार्य और व्यवहारों से यही प्रकट होता है कि वे नहीं चाहते कि लोग सच्चे धर्म को जानें और उसका पालन करें। वे लोगों को प्रतीकों में उलझाए रखना चाहते हैं।

संसार में जो प्रतीक या चिह्न में धर्म माना जाएगा, तो वह सार्वभौमिक व सार्वकालिक धर्म नहीं हो सकता। धर्म व्यवहार व आचरण, धारण करने का नाम है, जो सब कालों में, सब देशों में, सब मनुष्यों द्वारा किया जा सकता है। वही सच्चा धर्म है और खास बात तो यह है कि कुछ सहस्राब्दियों पूर्व तक उसे ही धर्म माना जाता रहा है। धर्म और मत का अन्तर यही है कि मत अपने और पराए में पक्षपातयुक्त होता है, धर्म पक्षपातरहित होता है। धर्म ईश्वर की आज्ञा का पालन है, मत मनुष्य के विचारों की गुलामी है। धर्म में सर्वहित और आत्मकल्याण निहित हैं, मत अपने और अपने लोगों के हित पर केन्द्रित है। धर्म के प्रतीक नहीं होते धर्म स्वयं ही होता है। मत मतान्तरों के प्रतीक होते हैं और उन पर लोग कटते मरते रहते हैं। अब समय आ गया है कि लोग मत मतांतरों के बखेड़ों को छोड़कर सच्चे धर्म का पालन करें जिसका ऋषि, मुनियों, साधु संतों, गुरुओं महात्माओं ने पालन किया है।

बेटा! अब है बड़ा हो गया

❑डॉ० सन्तोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी

मना करने पर पास था आता।
साथ में ही था वो सो पाता।
हाथ से मेरे, दूध था पीता,
वरना भूखा था सो जाता।
अकेलेपन का अभ्यास हो गया।
बेटा! अब है बड़ा हो गया।

डाँटा, डपटा, मारा-पीटा।
दूध पिलाया, खिलाया पपीता।
अपनी, उसकी, इच्छा मारी,
चाहा था, बने ज्ञान की गीता।
इंटरनेट से विद्वान हो गया।
बेटा! अब है बड़ा हो गया।

मोबाइल ही सार हो गया।
लेपटॉप से प्यार हो गया।
साथ न उसको भाता है अब,
लगता वह वीतराग हो गया।
अपने पैरों खड़ा हो गया।
बेटा! अब है बड़ा हो गया।

संयम का अभ्यास कर रहा।
बचपन बीता, चाव मर रहा।
स्वस्थ रहे बस, यही चाह है,
जग को दे जो, अभी ले रहा।
अपने आगे खड़ा हो गया।
बेटा! अब है बड़ा हो गया।

-जवाहर नवोदय विद्यालय,
केन्द्रीकोणा,
साउथ वैस्ट गारो हिल्स-७९४१०६
(मेघालय) 09996388169

मैं गत दिवस बिजली बिल ठीक कराने के लिये उनके कार्यालय में गया। गलती बोर्ड की ही थी। जब मैंने सम्बन्धित अधिकारी से बात की तो उसके कथन ने मुझे अन्दर से झकझोर दिया और मैं पूरी सामाजिक व्यवस्था के बारे में सोचने को विवश हो गया। मुझे कुछ ऐसा लगा-

न्याय जो लेने मैं चला न्याय न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना तो खुद चिन्तन हो जोय।।

❑**सुन्दरसिंह धर्मखेड़ी,** जींद
(9416514218)

अस्पताल में दवाई नहीं।
स्कूल में पढ़ाई नहीं।
न्यायालय में सत्य गवाही नहीं।
जेल में मिलाई नहीं।
राजनीति में सच्चाई नहीं,
क्या सरकारों में अधमाई नहीं?
पुलिस में सुनाई नहीं।
बाजारों में शुद्धताई नहीं।
आज झूठ बोलने में बुराई नहीं।
रोड़ पर सफाई नहीं,
जोहड़ पर पानी पिलाई नहीं।
खेती में कमाई नहीं,
युवा में तरुणाई नही।
बचपन में मस्ताई नहीं,
किसी की बात में टिकाई नहीं।
माँ रही माई नहीं,
भाई का कोई भाई नहीं।
दूध और अन्न की पिलाई नहीं।
घर में बिल्ली बिलाई नहीं।
आपस में हँसाई नहीं,
मौत पर करुणताई नहीं।
शादी में तन्हाई नहीं,
नाराजों की मनाई नहीं।
रही कोई लोग हँसाई नहीं।
आज मेहनत में कमाई नहीं।
खेल में खिल्हाई नहीं,
स्याण्यां में भलाई नहीं।
आज सत्संग में सच्चाई नहीं,
जोहड़ कुएँ की खुदाई नहीं।
सामाजिक (साँझी) भलाई नहीं।
दोस्ती में भी मिलाई नहीं।
बुरे के साथ दुशमनाई नहीं।
अच्छों के साथ मिलाई नहीं।
जोहड़ों में शुद्ध काई नहीं,
दामाद रहा खुद जंवाई नहीं।

यदि कानून विधि अपनाई नहीं,
लेटों में पशु लिटाई नहीं।
स्लेटों पे रही लिखाई नहीं।
गौ रही गौ माई नहीं।
यदि भीतर में शुद्धताई नहीं।
विदेशी कपड़ों की सिलाई नहीं।
कोई गुड़ की मिठाई नहीं।
रही कागज की लिखाई नहीं,
मनन में गहराई नहीं।
सोच में ऊँचाई नहीं।
इतिहास में सच्चाई नहीं।
अनुशासन में चलाई नहीं।
हुकूमत कभी गरमाई नहीं।
वैश्य में नरमाई नहीं।
आज स्त्रियाँ शरमाई नहीं,
क्योंकि पोथी पण्डितों में पण्डिताई नहीं।
जीव के प्रति करुणाई नहीं।
कभी यज्ञ की की आहुताई नहीं।
तो पर्यावरण की शुद्धताई नहीं।
कभी ईश्वर को अर्जी लाई नहीं,
सुन्दरसिंह यह कोई कविताई नहीं,
कहेंगे कि दिल की बात बताई नहीं।
तो होगी गात समाई नहीं।
यदि वेदों की महिमा गाई नहीं,
फिर हमने की कुछ कमाई नहीं।
इस रोग की और दवाई नहीं,
और समाज की भी भलाई नहीं।
इन दोषों की कोई भरपाई नहीं,
यदि वेदों की, की पढ़ाई नहीं।।

देशभक्ति, राष्ट्रीयता व अन्तर्राष्ट्रीयता

❑**रविदेव गुप्ता,** बी-५/१०८, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली ११००२५ (9818006185)

विश्व बंधुत्व की भावना का पर्याप्त उल्लेख वेदों में स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। सब प्राणी एक ही परमात्मा की संतान होने के कारण परस्पर भाई-भाई हैं,

इस सृष्टि में प्रत्येक मनुष्य ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार पृथ्वी के किसी भाग में जन्म लेता है। वह भूभाग, भौगोलिक दृष्टि से उस व्यक्ति का जन्म स्थान होने के कारण उसका अपना देश कहलाता है। अतः प्रत्येक मनुष्य का एक स्वदेश होता है और नैतिकता के अनुरूप वह उसकी मातृभूमि है जिसके साथ माता की तरह प्रेम करना, सब प्रकार का त्याग करना और संपूर्ण सामर्थ्य से उसके कल्याण का चिंतन करना एक वांछित सात्विक भाव है। विभिन्न भाषाओं में उसे मादरे-वतन, Motherland, Fatherland अथवा Native Country आदि रूप में सम्बोधित किया जाता है। व्यापक रूप में हम इसे उस व्यक्ति का Country व उसके प्रति भक्ति आदि को Patriotism कहेंगे।

वेदों में विशुद्ध देशभक्ति का अति उत्तमता से प्रतिपादन किया गया है। अनेक स्थानों पर उसके लिए 'माता' शब्द का प्रयोग कर उसके हितचिंतन के लिए निर्देश किया गया है-

उच्छ्वंचस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवंचना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि।। ऋ० १०/१८/११

अर्थात हे मातृभूमे! तू हमें सदा उन्नत करके सुख दे, कभी कष्ट न दे एवं उत्तम वस्तुओं को प्राप्त कराने वाली हो। जिस प्रकार माता पुत्र के साथ प्रेम करती है वैसे तू हमारे साथ प्रेम कर हमें सब ओर से आच्छादित करे।

यह मातृभूमि के प्रति हार्दिक प्रार्थना है। जब तक हम उसे अचेतन भूखंड समझते हैं, तब तक हम उसके साथ आंतरिक प्रेम प्रकट नहीं कर सकते।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।। अथर्व वेद १२/१/१२

अर्थात् यह भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ।

स्मरणीय है कि अपनी माता से प्रेम करने का अर्थ अन्यों की माताओं से द्वेष करना नहीं है।

यो नो द्वेषत्पृथिवि यः पृतन्याद्यो अभिदासान्मनसा यो वधेन।
अथर्ववेद १२/१/१४

तात्पर्य यह है कि अपनी मातृभूमि की रक्षा करना देशवासियों के पवित्र साध्यों में से है। जो द्वेष करते हों, जो मन से हमें दास बनाना चाहते हों (जैसे कि चतुर अंग्रेज शासक थे) अथवा जो सेना द्वारा आक्रमण करके शस्त्रास्त्रों द्वारा हमें अपने अधीन करना चाहें, उनका डटकर मुकाबला करना और अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता तथा अखण्डता की रक्षा करना वेदों के अनुसार सब देशवासियों का कर्तव्य है। वीर राणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रसाल, राठौर दुर्गादास, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह आदि ने इसी देशभक्ति के शुद्ध भाव से प्रेरित होकर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अनेक कष्ट सहे।

महर्षि दयानन्द की उत्कट देशभक्ति

महर्षि दयानन्द जी की गणना यद्यपि प्रायः राजनैतिक नेताओं में नहीं की जाती, क्योंकि उनका मुख्य कार्य वैदिक धर्म का उद्धार और सुधार रहा, तथापि देशभक्ति की वैदिक भावना उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनकी प्रबल देशभक्ति और निर्भयता का यह उदाहरण इस प्रसंग में उचित प्रतीत होता है। वेदों में जिस स्वतंत्रता की रक्षा का उपदेश किया गया है, वह स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए वे कितने अधिक उत्सुक थे, यह भी इस संवाद से, जो 1873 ई० में लार्ड नार्थब्रुक से हुआ था, ज्ञात हो सकता है।

लार्ड नार्थब्रुक ने इस बातचीत का विवरण इंडिया ऑफिस को भेजते हुए लिखा था कि सरकार को इस विद्रोही फकीर पर सतर्कतापूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए। वायसराय ने कहा- मुझे बताया गया है कि आप अन्य धर्मों पर जो कटु प्रहार करते हैं, उससे हिन्दुओं और मुसलमानों में आपके प्रति विरोध भाव पैदा हो गया है। क्या आपको यह भय है कि आपके विरोधी आप पर कोई आक्रमण करेंगें, विशेष रूप से मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आपको हमारी सरकार की ओर से किसी प्रकार के संरक्षण की आवश्यकता है? स्वामी दयानन्द जी का उत्तर था कि मुझे अपने ऊपर किसी के द्वारा आक्रमण का किसी प्रकार का भय नहीं है।

'मैं प्रतिदिन प्रातः सायं भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हूँ कि दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र मुक्त करें।'

लार्ड नार्थब्रुक ने इस स्पष्ट और निर्भीक उत्तर की कतई कल्पना नहीं की थी। उसने एकदम बातचीत समाप्त कर दी। इस बातचीत ने वायसराय के मन में ऋषि दयानन्द

के उद्देश्यों और कार्यों के सम्बन्ध में संदेह उत्पन्न कर दिया। तभी उन्होंने सरकार को इस विद्रोही फकीर (Rebel Fakir) से सावधान रहने की सलाह दी थी।

इतनी उज्ज्वल देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना रखते हुए भी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किस प्रकार एक 'महाराज सभा' अथवा 'सार्वभौम चक्रवर्ती महाराज सभा' की कल्पना की थी- इसे हम अंतर्राष्ट्रीयता के प्रसंग में आगे बताएँगे।

स्वामी विवेकानन्द की उज्ज्वल देशभक्ति

इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द जी के अन्दर भी उज्ज्वल देशभक्ति की भावना विद्यमान थी। युवकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था- Are you seized with that one idea of the misery of ruin and have you forgotten all about your fame, your wives, your children, your property, even your own bodies? Have you that in mind? That is the first step (to become a patriot), the very first step. (Complete works of Swami Vivekananda Vol III, P- 225)

स्वामी रामतीर्थ जिन्होंने स्वामी विवेकानंद की तरह अमरीका आदि में धर्म-प्रचार करके भारत माता का मुख उज्ज्वल किया, एक ब्रह्मनिष्ठ महात्मा थे। उनमें भी सात्त्विक देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी, जैसा कि उनके बनाये एक राष्ट्रीय गीत से (जो अंग्रेजी में स्वतः अमरीका में रहते हुए बनाया था) स्पष्टतया ज्ञात होता है। इस अत्युत्तम कविता का भावार्थ यह है कि-

परमेश्वर हमारे पुराने हिन्द को और कभी यशस्वी हिन्द को आशीर्वाद प्रदान करे। उसके सब पुत्र प्रेम में परस्पर मिल जायें। देश तुम्हारी सहायता की याचना करता है। प्रभो! उसकी प्रार्थना को अवश्य सुनो। उसके अंदर राष्ट्रीय भावना भर दो और दिग्दिगंत में उसकी कीर्ति को विस्तृत कर दो। ईश्वर शक्तिशाली हिन्द को आशीर्वाद दे।

लोकमान्य तिलक निर्भयतापूर्वक अपने विचार प्रकट करते थे और भारतीय संस्कृति के प्रतीक थे। **लाला लाजपतराय** जी भी इसी प्रकार के निर्भीक स्वार्थत्यागी देशभक्त थे।

राष्ट्रीयता

प्रत्येक देश की भौगोलिक सीमाएं होती हैं व उस देश के निवासियों के मध्य एक परिवार-भावना व एक संयुक्त संस्कृति विकसित होती है जो उनके भाषा, आचार व व्यवहार में एकरूपता का निर्माण करती है। कालांतर में परिस्थिति-जन्य कारणों से इसके जनसमूह विभिन्न देश-देशान्तरों में भी आप्रवासी के रूप में स्थायी रूप से

वेद ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उदघोष करते हैं।

बस जाते हैं। स्वदेश न होते हुए भी राजनैतिक दृष्टि से उसी देश की नागरिकता अपनाकर उस राज्य के वासी होकर रह जाते हैं। विदेशों की नागरिकता स्वीकार करके भी प्रवासीजन स्वदेश के अपने रीति रिवाज व संस्कृति के प्रति सदा आकर्षित रहा करते हैं। इस भाव को Ethnicity कहते हैं जो सदा उन्हें अपनी मातृभूमि में जड़ों से जोड़े रहती है। यह अपनी जड़ों से जुड़े रहने की नैसर्गिक भावना ही 'राष्ट्र' को जन्म देती है।

राष्ट्र एक जीवमान इकाई है, जो स्वयं प्रकट होता है और एक मातृभूमि की संतानों के मध्य में एक अविछिन्न एकता के रूप में परिलक्षित होता है। 'चोट यहाँ लगे और दर्द वहां हो' ही इसका एक महत्त्वपूर्ण मानदंड है। राष्ट्र एक भावात्मक स्वरूप है और एक वेदमंत्र द्वारा इसका स्पष्ट निरूपण होता है-

तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्त्विडा सरस्वती भारती।
महि गृणाना।। यजुः २७/१९

अर्थात् (इडा)-मातृभाषा, मही-मातृभूमि तथा (सरस्वती)- मातृ संस्कृति यह (तिस्रो देवी)- तीन देवियां इस राष्ट्र में सदा विराजती रहें। राष्ट्र का अर्थ ही है भाषा, वेश-भूषा, लिपि, रीति-रिवाज, उत्सव-पर्व, महापुरुष, मातृभूमि के प्रति निष्ठा में एकरूपता।

उप सर्प मातरं भूमिमेताम्।। ऋ १०/१८/१०

अर्थात् इस मातृभूमि की सेवा करो।

राष्ट्रभक्त-राष्ट्रद्रोही

इन कसौटियों पर खरा उतरने वाला ही राष्ट्रभक्त व इनमें से एक पर भी खरा न उतरने वाला सरलता से राष्ट्रद्रोही माना जा सकता है। ये अनिवार्य अर्हताएँ हैं किसी भी जन की राष्ट्रीयता को निर्विवाद रूप से परखने की।

देश, राज्य व राष्ट्रः

देशः- एक दृश्यमान सत्ता, एक निश्चित भूखंड और उसके निवासी जनसमुदाय। एक शरीर =यन्त्र

राज्यः- एक व्यवस्था= शासन प्रणाली, संरक्षण तथा नियंत्रण की एक तांत्रिक व्यवस्था यथा मानव शरीर की इंद्रियां। =तंत्र

राष्ट्रः- एक भावनात्मक सत्ता= यथा शरीर में स्थित आत्मा- इसके बिना शरीर निर्जीव व इन्द्रियाँ निष्क्रिय। =मंत्र

अन्तर्राष्ट्रीयता

समस्त वैश्विक मानवमात्र की एकता व कल्याण

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

जे एन यू में राष्ट्रवाद की वीणा

स्वामी विवेकानंद सरस्वती, कुलाधिपति- गुरुकुल प्रभात आश्रम

(१७ दिसम्बर २०१८ को जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में महाराजा छत्रसाल स्मृति समारोह समायोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पूज्य स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी महाराज (कुलाधिपति- गुरुकुल प्रभात आश्रम) का अध्यक्षीय वक्तव्य हुआ। राष्ट्रप्रेमी सज्जनों के हितार्थ प्रस्तुत है।)

स्वामी जी ने संस्कृत में वक्तव्य प्रारम्भ किया। पुनः श्री हरिराम मिश्र के निवेदन पर हिन्दी में व्याख्यान हुआ।

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयन्त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम।।

ऋक्० १०/१२८/१

श्रद्धामयी पवित्र मातृशक्ति! सरस्वती के उपासक छात्र तथा अध्यापकवृन्द! महाराजा छत्रसाल जी के संबंध में उनके जीवनवृत्त को लेकर वर्तमान में जिन अनेक पक्षों का स्पर्श किया जा सकता है- समता है और फिर उदारता है, आपने उसके विषय में सुना। किंतु मैं तो यह सोचता हूँ कि इन सबका मूल्याकंन छत्रसाल जी के जीवन में हुआ कैसे? और भी लोग थे, उनमें क्यों नहीं ढूंढा गया समता और जातिवादविहीनता को। एक ही कारण है, वे वीर थे। 'वीरभोग्या वसुन्धरा', 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु' (यजु०- 17/43)। जो वीर होता है, वही धीर होता है, और जब वह आगे चलता है तो उसका लोग अनुकरण करते हैं। मैं समतावादी बनूं, मैं यह बनूं मैं वह बनूं, क्या मेरा मूल्य है? बकरी, बकरी जानते हैं न! बकरी जंगल में शांतिपाठ करेगी ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः० इसका क्या परिणाम निकलेगा जी! बकरी जब शांतिपाठ करेगी तो भेड़िए को बहुत सुगमता से, ढूंढना नहीं पड़ेगा, पता लगा कि वह मेरा भोज्य (खाद्य) पदार्थ वहाँ है, तो आकर वह शांतिपाठ करने वाली बकरी को चट कर जाएगा, भक्षण कर जाएगा। शांतिपाठ तो हुआ नहीं, न जंगल में शांति हुई।

अब उसी स्थान पर सिंह आकर के शांतिपाठ करता है- ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः० बोलता है तो सारे जंगल के जीव-जंतु क्या कहते हैं? वनराज शांति पाठ कर रहे हैं, चुपचाप बैठो। (करतलध्वनि) शांतिपाठ कौन कर रहा है? वनराज कर रहा है, और वनराज कर रहा है शांतिपाठ तो तुम्हें चुप बैठना चाहिए, नहीं तो तुम्हारी खैरियत नहीं, तुम बचोगे नहीं। तो छत्रसाल जी की सबसे बड़ी बात यही थी कि 'बलमुपास्व' (छान्दोग्य 7/8/1)। उन्होंने बल की उपासना की। बिना बल के तो कुछ होगा ही नहीं। विद्याबल हो, शारीरिक बल हो, बुद्धिबल हो, बल ही तो सब कुछ करता है। जो वीर है वही शांति की स्थापना कर सकता है, दुर्बल से शांति की स्थापना नहीं होगी (करतलध्वनि)।

मैं यह दिखा रहा हूँ कि जो लोग बातें बनाते हैं केवल, मैं यह बताना चाहता हूँ कि जो दुर्बल व्यक्ति हैं, जिनका मानसिक स्तर इतना गिर चुका है कि जो दूसरे की हाँ में हाँ मिलाने के अतिरिक्त कुछ जानते ही नहीं। अनेक सुविधाएं उनको मिलती हैं, वो लिखते पढ़ते रहते हैं, किंतु देखा जाए तो वे कितने दुर्बल हैं। दो पैसे के कारण से उन्होंने अपना चरित्र बेच दिया है। अरे वेश्या चाहे कितनी ही अट्टालिका में रह रही हो, कितनी ही धनवती हो, कितना ही कुछ हो, क्या वह एक सामान्य घर में रहने वाली सती का मुकाबला कर सकती है? वेश्या धन के बल पर कुछ भी करे, उसके पास कितने ही आने जाने वाले आएं, किंतु सती के सामने वह कुछ भी नहीं है। सावित्री के सामने कुछ नहीं है, सीता के सामने वह कुछ नहीं है।

अब सीता की बात चलती है तो मैं बता देता हूँ, जब भगवान राम बार-बार कहने लगे कि वहाँ जंगल है, यह भय है-वह भय है, सारी समस्याएं हैं, तुम्हारी रक्षा कौन करेगा? जब वे बार-बार कहने लगे तो सीताजी को क्रोध (मन्यु) आ गया। वह पहली बार है जब सीताजी को क्रोध आया है, और वे कह रही हैं भगवान राम से-

किं त्वाममन्यत वैदेहः पिता मे मिथिलाधिपः।
रामं जामातरं प्राप्य स्त्रियं पुरुषविग्रहम्।। (अयो०-३०/३)

मेरे पिता वैदेह ने आपके साथ मेरा विवाह किया, क्या यह सोचकर किया कि यह पुरुष; पुरुष रूप में स्त्री है पुरुष नहीं है। अरे, यह तो स्त्री है, पुरुष-वुरुष नहीं है जो बार बार यह कहे कि तुम्हारी रक्षा कौन करेगा? तुम्हारी रक्षा कौन करेगा? उसके बाद रामचंद्र जी ने कुछ कहा ही नहीं। उन्होंने कहा- चलो चलो (करतलध्वनि)। इस राम की भुजाओं में बल है, पत्नी की रक्षा करने का। उसकी भुजाओं में बल है। बस चल दिए। आगे मार्ग में कहीं हरण हुआ,

लंका पुरी में रही, कभी रामचंद्र जी ने नहीं कहा कि मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकता। तो, पौरुष होना चाहिए।

मैंने तो इस कागज को इसलिए मंगाया कि 15 वर्ष तक जो सैक्युलरवाद की रट लगाते रहे, जिन के नाम पर यह विश्वविद्यालय है, अभी गांधीजी की बात चल रही थी, भाई गांधीजी की बात छोड़ दीजिए। ये गांधीजी कृष्ण के उपासक बिल्कुल भी नहीं थे। वह तो गीतापाठ दिखाने के लिए करते थे। उन्होंने अपनी प्रस्तावना में स्पष्ट लिखा है कि गीता ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है। गीता के कृष्ण मूर्तिमान् शुद्ध-संपूर्ण ज्ञान हैं, परंतु वे काल्पनिक हैं। यहाँ मेरा हेतु कृष्ण नाम के अवतारी पुरुष का निषेध करना नहीं है। मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूं कि संपूर्ण कृष्ण काल्पनिक हैं।- प्रस्तावना पढ़िए अनासक्ति योग की। मैं तो पढता हूँ, और लोगों को दिखाता हूँ। जो गांधीजी के भक्त थे, मैंने कहा- गांधीजी तो यह कहते थे। मेरे कहने से नहीं, स्वयं पुष्टि कीजिए।

तो इन बातों को छोड़िए, नेहरुजी शांति का आलाप करते थे। जब 1962 में चीन ने आक्रमण किया। आप देखिए की आपकी 62 में क्या आयु रही होगी? आप अपना अपना देखिए। बहुत से तो ऐसे लोग हो सकते हैं जो उत्पन्न भी नहीं हुए होंगे। मैंने आकाशवाणी पर नेहरुजी को रोते हुए सुना बिहार में। क्या रो रहे थे? मुझे पूरा उतना रोना तो नहीं आता है नेहरु जी जैसा, किंतु वे कह रहे थे- आज मेरे मित्र (चीन) ने बड़ा विश्वासघात किया है। वे तब राष्ट्र के नाम संदेश भेज रहे थे, जब चीन ने आक्रमण किया। बड़ा विश्वासघात किया, रो रहे थे वे। बड़ा लंबा, अरे एक वाक्य का तो था नहीं। तो मैंने कहा- इस नाटक की क्या आवश्यकता है? कोई नेहरु साधारण व्यक्ति थे? देश के प्रधानमंत्री पहले से लेकर के 17 वर्ष तक रहे। 64 में तो उनका देहांत हुआ है, 47 में प्रधानमंत्री बने। गणित के आप विद्यार्थी हैं, यह जान लीजिए।

15 वर्ष बीत गये। उसके बाद संसद में जब उनके सामने प्रश्न किया गया तो नेहरुजी संसद में क्या कह रहे हैं? मैं वह सुनाना चाहता हूँ। जो आपके वामपंथी चलाते हैं न मित्रता की बात। वे 15 वर्ष के बाद बोल रहे हैं- **मुझे कई ऐसे मौके याद हैं जब वरिष्ठ सेनाध्यक्ष हमारे पास आए और रक्षा मंत्रालय को लिखकर भी बताया कि उन्हें कुछ हथियार चाहिएँ। अगर हमारे पास दूरदृष्टि होती, अगर हम सटीकता से जानते कि क्या होने वाला है, तो हम कोई दूसरी चीज करते। चीनी आक्रमण से भारत ने यह सीखा है कि आज के संसार में कमजोर राष्ट्रों की कोई जगह नहीं है।** यह

जब आप लोग गरजेंगे तब विश्व में शांति स्थापित होगी। आपके मिमियाने से, बकरी की तरह मिमियाने से विश्व में शांति नहीं होगी।

15 वर्ष के बाद इन्होंने सीखा, जब सारा लुट गया देश। लोगों ने बताया तब नहीं सीखा, अब कह रहे हैं- हम अपने ही बनाए हुए एक काल्पनिक संसार में रह रहे हैं। यह नेहरुजी का वक्तव्य है संसद में। पूरा तो आप देख लीजिएगा, ये तो जितना मुझे मिला, मैंने देखा। 15 वर्ष के बाद उनका यह वक्तव्य आता है। यदि वे पहले समझ जाते तो आज 1 लाख 35 हजार वर्ग किलोमीटर भूमि चीन के कब्जे में नहीं होती, आज भी वह है। अरुणाचल पर तो और हाथ मार रहा है कि अरुणाचल मेरा है।

छत्रसाल जी के इस जन्मदिवस या इनके संबंध में जो कार्यक्रम रखा गया है, इसमें मैंने हरिराम मिश्र जी से पूछा, और इसलिए पूछा कि भाई संस्कृत वाले हो, मैं संस्कृत में बोलूँ या हिंदी में बोलूँ? मैं अभी बैंगलोर में गया था, एक आश्रम में। साईं बाबा का कोई आश्रम था, मुझे बुलाया। मैंने देखा वहाँ तो अंग्रेजी का वातावरण है। मैंने यही कह दिया कि मैं तो संस्कृत में बोलूंगा, वहाँ जाऊँगा तो। उन्होंने कहा ठीक है संस्कृत में बोलिएगा आप। वहाँ गया तो उन्होंने कहा कि यदि हिंदी में बोलें तो अच्छा है।

मैंने कहा- उत्तर भारत बहुत है हिंदी में बोलने के लिए। मैं यहाँ आया हूं तो मैं संस्कृत में ही बोलूंगा। बिना बोले चला जाऊंगा, बोलूंगा संस्कृत में ही (करतलध्वनि)। कन्नड़ मुझे आती नहीं। अंग्रेजी मैं बोलूंगा नहीं। हिंदी तो मैं बोल ही नहीं सकता, क्योंकि मैं तो संस्कृत में बोलने के लिए आया हूँ। कर्नाटक में संस्कृत समझने वाला कोई नहीं हो और इतने बड़े आश्रम में! (यह तो संभव नहीं) वे २ दिन बहुत चक्कर काटते रहे। अब फिर उनको अनुवादक जैसे-तैसे कर कराके मिला। वह अनुवादक भी ऐसा ही था बेचारा, आकर बोला- मुझे संस्कृत आती तो नहीं, किंतु चंदामामा मैं थोड़ा पढ़ लेता हूँ। चंदामामा पढ़ने वाला मेरा अनुवादक बनाया गया। यह आत्मगौरवहीनता ही तो है।

भाई, जब हम लोग विदेश में जाते हैं तो अंग्रेजी सीखते हैं। वे जब विदेश से आते हैं तो वे हिंदी और संस्कृत क्यों नहीं सीखते? हमारे आश्रमों में क्यों नहीं नियम हो? कि तुम हिंदी बोलोगे या संस्कृत बोलोगे तब तुम्हें यहाँ आवास मिलेगा। और नहीं बोलोगे तो सीख करके आओ। यह आत्म गौरवहीनता का सबसे बड़ा प्रमाण है। हममें आत्महीनता की जो भावना आई हुई है, उसका मुख्य कारण मैं बता देता हूँ।

एक बार मिस स्टो नामक महिला थी। उस समय अमेरिका में दक्षिणी अफ्रीका के हब्शियों को भेड़-बकरी की तरह से मोल-भाव करके बेचा जाता था गुलाम के रूप में। तब उसने एक पुस्तक लिखी और पुस्तक का नाम लिखा- 'अंकल टोम्स केबिन'। पुस्तक तो अंग्रेजी में है, किंतु उसका जो मुख्य अंश है, हिंदी में मैं वह सुना देता हूं आपको, जिससे आपको दुःख भी होगा और थोड़ा सा धैर्य भी होगा। वह क्या कह रही है-

'जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत शीघ्र पनपती हैं। पहली तो यह कि उन लोगों को अपने पहले खान-पान, रहन-सहन, चाल-चलन और जीवन के सभी दूसरे मार्गों तथा संसाधनों से घृणा होने लगती है।' कौन लोग? जो पराधीन होते हैं। आगे वह मां क्या लिख रही है- 'दूसरी यह कि अपने मालिकों के खान-पान, रहन-सहन चाल-ढाल, बोल-चाल तथा जीवन के सभी साधनों में रूचि बढ़ने लगती है।' यह आपके जो छात्र हैं न, जो उधम मचाते हैं, ये उन्हीं में से तो हैं। अच्छा, उनकी दासता जितनी पुरानी होती जाती है, ये दोनों बातें उतनी गहरी, स्थायी और सुदृढ़ होती जाती हैं। यदि इन दासों के लिए मालिकों की ओर से शिक्षा-दीक्षा का भी प्रबंध कर दिया जाए तो ये लोग इस शिक्षा के माध्यम से अपने आपको यहाँ तक बदल डालते हैं कि चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। आप बताए थे न रोमिला थापर के बारे में, वे ब्रिटिश जैसी हैं क्या? चमड़े से ही तो पता लगता है कि वे भारतीय हैं। कि वैसी है जैसा अमेरिका का ब्रिटिश होता है। वैसा उनका रंग-रूप है क्या? मैं तो नाम नहीं लेना चाहता था। रोमिला थापर के विषय में एक व्यक्ति ने कहा कि वे तो इतिहास की बड़ी जानकार हैं। मैंने कहा- थापर नगर तो एक मेरठ में भी है। यह स्वयं वह माँ लिख रही है- 'चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। ये अपनी सत्ता को, अपने अतीत को, अपने पुराने गौरव को, यहाँ तक कि अपने बाप-दादों को भी भूल कर अपने को प्रत्येक बात में अपने स्वामियों के जीवन में बदलने के लिए यत्नशील रहते हैं।'

लेनिन हो, स्टालिन हो, ये तो सब चलेगा। चाणक्य यहाँ हो यह नहीं चलेगा। कौन कहता है? चमड़ी वाले कहते हैं दास? वे नहीं कहते, चमड़ी वाले जिनकी चमड़ी भारत की है, वे सब कहते हैं। वे आगे लिखती हैं- 'किंतु ऐसा दिन कभी नहीं आयेगा कि अपने मालिकों के साथ एकम-एक कर सकें। क्योंकि वे तो इनको दास ही समझेंगे।' चाहे रोमिला थापर हो चाहे कोई अन्य हो (करतलध्वनि)।

एक पुस्तक निकली थी- गोपाल मीनन, राधाकृष्णन् के जो पुत्र हैं उनकी। आपके यहां से प्रकाशित हुई है। उसकी समालोचना राष्ट्रधर्म में प्रकाशित हुई थी। ऐसा आरोप लगाया है राधाकृष्णन् पर, एकदम स्तब्ध रह जाना पड़ता है। क्या कोई ऐसा कुपुत्र हो सकता है? गोपाल मीनन जो राधाकृष्णन् के पुत्र हैं, उन्होंने अपने पिताजी के ऊपर चारित्रिक आरोप लगाया है। उस पुस्तक को आप पढ़िए, यह यहीं से तो प्रकाशित है। उन्होंने यहाँ कुछ दिन पढ़ाया भी है। धन्य महोदय! धन्य डॉ० गोपाल मीनन महोदय! क्या ऐसा भी कोई पुत्र हो सकता है? हो सकता है, जो बिक जाता है। दासता से जो बिक जाता है।

इन दासों से मुक्त होने की आवश्यकता है। आपका संस्कृत विभाग जागरुक है। मैं सोचता हूँ, मिश्र जी वहां झा जी भी बैठे हुए हैं, वे गोष्ठी में गये थे, इनसे मेरा परिचय है। अरे भाई, नेहरु विश्वविद्यालय को संस्कृत का परिसर बनाओ। सब लोग संस्कृत बोलें, सब लोग समझें। क्या है यह जे एन यू फे एन यू। हटाओ ये सब जेन्यू फेन्यू। या तो कहो जवाहरलाल नेहरु। हम नाम के विरोधी नहीं। चलो बेचारा रोया तो है, 15 वर्ष के बाद रोया है, आया तो मार्ग पर। यदि 15 वर्ष पहले यह उसने यह सीख लिया होता कि हम काल्पनिक विचारों में डूबे हुए हैं। (तो अच्छा होता)

गांधीजी भी तो काल्पनिक विचारों में ही डूबे रहते थे। और क्या, मैं तो कहता हूं कि भाई इन लोगों का नाम मत लिया कीजिए। यह छत्रसाल का मंच है, यह शिवाजी का मंच है, महाराणा प्रताप का मंच है (करतलध्वनि)। यह क्या है? यहाँ चांटा लगाओ, यह दूसरा गाल तुम्हारा है! (करतलध्वनि)। दुर्बल लोगों का मंच बना देते हो तुम। सिंह की तरह से गरजिये।

जब आप लोग गरजेंगे तब विश्व में शांति स्थापित होगी। आपके मिमियाने से, बकरी की तरह मिमियाने से विश्व में शांति नहीं होगी। परमात्मा आप सबको शक्ति दे, संस्कृत वालों को विशेष करके शक्ति दे। 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु'। आप आगे बढ़ें। मैंने जो मंत्र बोला था कि नहीं, प्रार्थना में 'ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयन्त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम। मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः।' चारों दिशाएं मेरी ओर झुक जाएं। जब इस प्रकार का आप पाठ करेंगे तो यूरोप और वाशिंगटन भी आप की सुनेगा। बकरी की नहीं सुनेगा। सिंह बनिए, छत्रसाल बनिए, छत्रपति शिवाजी बनिए।

मैं महाराष्ट्र में गया। वहाँ देखा मुंबई में। शिवाजी का जहाँ भी प्रकरण आया, मैंने किसी के मुख से नहीं सुना शिवाजी। मैं तो बोल देता था। वे कहते हैं- छत्रपति शिवाजी। छत्रपति शिवाजी शब्द लगाते हैं। अहिल्याबाई के वहां

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

आदर्श

सत्य और न्याय के पक्षधर

ईश्वरभक्त सुकरात

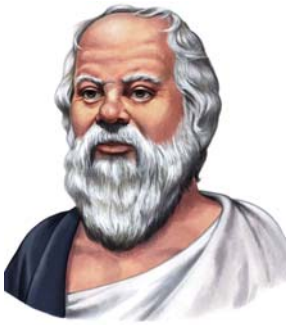

कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा 0172-4010679

सुकरात ग्रीस नाम के देश मे एथेन्स नगर के निवासी थे। उनका समय ईसा से लगभग ४०० वर्ष पूर्व अर्थात् अब से लगभग २४०० वर्ष पूर्व का था। उस समय एथेन्स की जनता अन्धविश्वास, रूढ़ियों और गलत परम्पराओं में फंसी हुई थी। सुकरात उन्हें उस अज्ञान से बाहर निकालने का प्रयास करते थे। इसी कारण उन्हें विष का प्याला पिलाकर मृत्यु-दण्ड दिया गया था। सुकरात पर मुकदमा एथेन्स की सारी जनता के सामने चला था। लोकतांत्रिक एथेन्स का हर नागरिक न्यायाधीश था। सुकरात २२० के मुकाबले २८१ मतों से दोषी पाए गए थे। एथेन्स में एक ही दिन में निर्णय होता था। मुकदमे के दौरान सुकरात ने अपने पक्ष में जो तर्क दिए थे, उन्हीं पर यह लेख आधारित है। सुकरात के शिष्य प्लेटो ने उन्हें लिपिबद्ध किया था। सुकरात सत्य को और आत्मा की पवित्रता को सबसे अधिक महत्त्व देते थे। उन्हीं के शब्दों में-

सत्य और तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी की बात को माना नहीं जा सकता।-- मैं छोटी या बड़ी किसी बात को न तो छिपाता हूँ, न तथ्यों का दमन करता हूँ---। ईश्वर ने मुझे ऐसा करने की आज्ञा दी है---। देवतागण पवित्रता से प्रेम करते हैं क्योंकि वह पवित्र है, वह इसलिए पवित्र नहीं है कि देवतागण उससे प्रेम करते हैं।

एथेन्सवासियो! आप मेरे भाषण की शैली पर न जाएं। यह अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। आप सिर्फ इस बात पर ध्यान केन्द्रित करें कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह न्यायपूर्ण है या नहीं।

मेरा यह विश्वास है कि केवल ईश्वर ही वास्तविक रूप से ज्ञानी है और मनुष्य के ज्ञान का मूल्य नहीं के बराबर है।

मेरे ऊपर वे यह आरोप लगाते हैं कि मैं लोगों से कहता हूँ कि वे देवताओं पर विश्वास न करें। मैं नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूँ। मैं नागरिकों के देवताओं में विश्वास नहीं करता और नए देवताओं में विश्वास करता हूँ। वास्तविकता यह है कि वे सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते। वे ज्ञान का दिखावा करने वाले अज्ञानी लोग हैं--। मैं ऐसा काम कभी नहीं करूँगा जिसे मैं जानता हूँ कि बुरा है और मैं उस कार्य से भी भयभीत होकर पीछे हटने वाला नहीं हूँ जो अच्छा है।

हे एथेन्सवासियो! यदि आप मुझे इस शर्त पर छोड़ने को तैयार हैं कि मैं अपने विचारों को त्याग दूँ-- तो मेरा उत्तर है कि मैं ईश्वर की आज्ञा मानूँगा, आपकी नहीं। जब तक मुझ में सांस और शक्ति है, तब तक मैं अपनी मान्यताओं को नहीं छोडूँगा और न आप में से प्रत्येक को यह सत्य बताने में चूकूँगा।

एथेन्सवासियो! आप मुझे छोड़ें या न छोड़ें, पर एक बात के सम्बन्ध में आप निश्चिन्त रहें कि मैं अपने जीवन का तरीका नहीं बदलूँगा। इसके फलस्वरूप मुझे चाहे एक बार नहीं, कई बार मरना पड़े। मैंने अपनी सारी जिन्दगी आपको यह समझाने में लगा दी कि आप अपनी आत्मा की पूर्णता (पवित्रता) के लिए सबसे अधिक प्रयत्न करें।

मैं आपसे यह अनुरोध करता हूँ कि आप मुझे सजा देकर ईश्वर के विरुद्ध पाप न करें। यदि आप मुझे मृत्यु-दण्ड देते हैं तो आपको आसानी से मेरे रिक्त स्थान की पूर्ति करने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। आलसी लोगों की तरह आप परेशान हैं क्योंकि आपको जगाया जा रहा है।

मानवीय आवेग पर होता तो मैं अपने सारे कामों को तिलांजलि न देता और इतने सालों से अपने निजी मामलों को बिगड़ने न देता। मैं बराबर आपकी सेवा में लगा रहा। हर आदमी को एक पिता या बड़े भाई की तरह मिलकर यह समझाता रहा कि वह सत्कार्य पर ध्यान दे। मैं यह सब निस्वार्थ भाव से, बिना किसी से पैसा लिए करता रहा हूँ।

एथेन्स या और किसी भी स्थान पर कोई भी आदमी जो जनगण की इच्छाओं का विरोध करता है और राज्य के अन्दर व्याप्त भयंकर अन्याय और अवैधता को रोकने की कोशिश करता है वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। जो व्यक्ति न्याय पक्ष के लिए वास्तव में लड़ना चाहता है, उसे लड़ाई निजी व्यक्ति के रूप में जारी रखनी

होगी न कि सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में।

होमर के शब्दों में– 'मैं डंठलों या पत्थरों से पैदा नहीं हुआ हूँ, बल्कि एक स्त्री के गर्भ से पैदा हुआ हूँ।' मेरे भी नाते-रिश्तेदार हैं। मेरे तीन बच्चे हैं, उनमें से एक नवयुवक है और दो अभी छोटे हैं। फिर भी मैं उनमें से किसी को आपके सामने न तो पेश करूँगा और न आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप मुझे छोड़ दें। मैंने अपनी जिन्दगी आराम से न बिताने की प्रतिज्ञा की है।

सुकरात को दोषी मानकर मृत्यु-दण्ड दिया गया।

मैं समझता हूँ कि मृत्यु से बचना उतना कठिन नहीं है जितना कठिन दुष्टता से बचना है, क्योंकि दुष्टता मृत्यु से अधिक तेज है।

एथेन्सवासियो! आपने मुझे मृत्यु-दण्ड दिया है तो मैं कुछ भविष्यवाणी करना चाहता हूँ। मैं मरने जा रहा हूँ और यही समय होता है जब मनुष्यों में भविष्यवाणी करने की शक्ति अधिक होती है। मैं यह भविष्यवाणी करता हूँ कि जिन लोगों ने मुझे मृत्यु-दण्ड दिया है उन्हें इससे कहीं अधिक सजा त्योंही मिलेगी ज्योंही मैं मर जाऊँगा। बहुत से और लोग पैदा होंगे जो आपसे हिसाब मांगेंगे।

साधारण विश्वास के अनुसार मृत्यु एक परिवर्तन है और आत्मा की एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा मात्र है। अब समय हो चुका है और हमको जाना चाहिए– मुझे मरने के लिए और आपको जीने के लिए। रहा यह कि जीवन बड़ा है या मृत्यु, इसे तो ईश्वर जानता है और केवल ईश्वर ही जानता है।

अब भी मैं वही हूँ जो हमेशा रहा हूँ, एक ऐसा आदमी जो युक्ति की सच्ची आवाज को सुनता है। वे तर्क मुझे हमेशा की तरह इस समय भी सही लगते हैं।

कौन ज्यादा मूल्यवान है? शरीर या आत्मा? हमें इस बात पर नहीं जाना चाहिए कि बहुत से लोग क्या कहेंगे। हमें सिर्फ यह सोचना चाहिए कि जो भलाई और बुराई को समझ सकता है, वह क्या कहता है और सत्य किस पक्ष में है।

क्या हम यह विश्वास नहीं करते कि आत्मा की शरीर से विमुक्ति ही मृत्यु है। आत्मा उस समय सही रूप में तर्क करती है जब वह शरीर को किनारे रख देती है। जो व्यक्ति मृत्यु को पास आते देखकर कष्ट का अनुभव करता है वह ज्ञान का प्रेमी नहीं है, बल्कि शरीर का प्रेमी है। संयम का अर्थ है अपने आवेगों पर नियन्त्रण और शासन कायम रखना।

आप लोगों को तथा अपने गुरुजनों को छोड़कर जाने में न तो मुझे क्रोध है और न कष्ट। इसका कारण है कि मैं ऐसा विश्वास करता हूँ कि अगले संसार में मेरा इस संसार की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छे मित्रों तथा गुरुओं से सम्बन्ध होगा। मृतक की आत्माएं रहती हैं और मृतक फिर से जीवन प्राप्त करते हैं। शरीर को जीवित रखने वाला तत्त्व है– आत्मा। आत्मा अमर है, अविनाशी है और शरीर नश्वर है।

जिन मनुष्यों ने बेलगाम होकर पेटूपन किया, मनचलेपन से काम किया या शराबी रहे, उनकी आत्माएं शायद गधों आदि पशुओं के शरीरों में जाती हैं। जिन लोगों ने अन्याय, अत्याचार, लूटमार का जीवन बिताया है, उनकी आत्मा भेड़िया, बाज और भालुओं के शरीरों में प्रवेश कर जाती हैं–आत्माएं समस्वभाव प्राणियों के शरीर में जाती हैं।

उनमें से सबसे अधिक सुखी वे हैं जिन्होंने सामाजिक और जनहित के कार्य किए हैं अर्थात् संयम और न्याय से काम लिया है। वे अपनी ही तरह मधुर और सामाजिक प्रकृति वाले प्राणियों में लौट आते हैं। जैसे मधुमक्खी, तितली या चींटियां। ऐसा भी हो सकता है कि वे फिर से मनुष्य के शरीर में लौट आएं और योग्य नागरिक बनें।

बहुत थोड़े लोग ही अच्छे या बुरे हैं। अधिकांश लोग न तो अच्छे हैं और न बुरे। बहुत बड़ी और बहुत छोटी चीजों के सम्बन्ध में जो स्थिति है वैसी ही स्थिति इस मामले में है। यदि आप बहुत लम्बा या बहुत छोटा आदमी खोजें तो उसका पाना सबसे कठिन होगा। इसी प्रकार से बहुत तेज और बहुत सुस्त, बहुत नीच और बहुत उदार आदमी पाना भी कठिन होगा। अति वाले नमूने की बहुत कमी है और औसत नमूने ही अधिक और बहुसंख्यक हैं।

आपको यह जानना चाहिए कि शब्दों को गलत तरीके से इस्तेमाल करना न केवल एक दोष है बल्कि इससे आत्मा में बुराई पैदा होती है।

पीने के लिए विष का प्याला जब सुकरात को थमाया गया तब सुकरात ने बिना कांपे वह ले लिया। न तो उनके चेहरे का रंग बदला, न माथे पर शिकन आई। सुकरात ने प्रार्थना की–

'इसके बाद मेरी यात्रा शुभ हो, यही मेरी प्रार्थना है।' इन शब्दों के साथ उन्होंने प्याले को अपने होंठों से लगा लिया और उस विष को शान्ति से पी लिया।

सुकरात के मित्र जो उस समय उनके पास ही थे, बड़े भयभीत, परेशान तथा दुःखी थे। वे रोने लगे। तब सुकरात ने कहा कि 'मैंने सुन रखा है कि मनुष्य को शान्ति से मरना चाहिए। इसलिए आप लोग शान्त रहें।' उनके मित्रों ने रोना बन्द कर दिया और सुकरात शान्तिपूर्वक परलोक को चले गए।

मनुस्मृति में नारी के अधिकारों का प्रश्न-४

पिता की सम्पत्ति पर अधिकार

❒**महीपाल आर्य पूनिया**, (प्राध्यापक)
ग्रा० पो० मतलौडा, जिला हिसार (9416177041)

(गतांकों से आगे)

दायभाग के नियम निर्धारित करने से पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि इन नियमों का मूल आधार क्या है! पिता मरने पर संतान के लिए क्या छोड़ सकता है, यह पहला प्रश्न है। यह छोड़ी हुई वस्तु किसको मिलनी चाहिए, यह दूसरा प्रश्न है। संतान को पिता-माता का ऋणी कहते हैं, उनको पितृ-ऋण चुकाने का आदेश है। यह पितृ ऋण क्या है? सबसे मुख्य वस्तु जो संतान को अपने पितरों से मिलती है, वह शरीर है। शरीर केवल मांस या रक्त का पिंड ही नहीं है, उस पिंड के संस्कार, भाषा, विद्या, वंश, परंपरागत प्रथाएं-- सभी सम्मिलित हैं। यह संतान को (लड़के और लड़की दोनों को) दायभाग में मिलते हैं। यह स्वाभाविक बात है। इसके लिए समाज नियम या राजनियम की आवश्यकता नहीं, न स्मृतिकारों को कुछ आदेश करने की जरूरत है। दूसरी वस्तुएँ हैं-रुपया, पैसा, गाय-बैल, धन-धान्य इत्यादि; जिनको साधारणतया बांटा जा सकता है। इन पर सन्तान में झगड़ा हो सकता है, इसलिए राजनियम की आवश्यकता है। परंतु यहाँ राज (या राजा) का आक्षेप (हस्तक्षेप से अभिप्राय है) दो दृष्टियों से होता है या होना चाहिए। प्रथम तो शांति भंग न हो। दूसरे अधिकारियों को अपनी-अपनी उन्नति करने के लिए समान पैतृ-अवलंबन मिल जाए।

आजकल धन की अत्यंत वृद्धि होने के कारण अमेरिका की रियासतों (यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका) में कुछ ऐसे नियम बना दिए गए हैं कि संतान को पैतृक धन की एक नियत मात्रा से अधिक नहीं मिल सकती। क्योंकि प्रायः देखा जाता है कि परिश्रमी पिता की बहुत बढ़ी हुई जायदाद का स्वामी होकर पुत्र प्रायः आलस्य, प्रमाद तथा व्यभिचार का जीवन व्यतीत करने लगता है। इससे देश को हानि होती है। मनुस्मृति के देखने से पता चलता है कि समाज में उस समय इतना धन बाहुल्य का रोग न था। इससे इस प्रकार के नियम बनाने की आवश्यकता न थी।

प्राचीन मिस्र में राजवंश के लोग अपनी सगी बहन से विवाह करते थे। ब्रह्मा देश के पूर्व की कुछ जातियों में यह प्रथा कि जो राजा होता है वह अपनी सगी बहनों से विवाह कर लेता है। यदि विवाह की दृष्टि से देखा जाए तो यह विधान सर्वथा दोषयुक्त है।

तीसरी चीज है- भू-संपत्ति, इसको आजकल की भाषा में जायदाद, (लैंडिड प्रॉपर्टी) कहते हैं। भूसंपत्ति की नींव कब से पड़ी, यह कहना कठिन है। आजकल तो भू संपत्ति को एक भयानक रोग समझा जाता है। साम्यवादियों का विचार है कि कोई जायदाद किसी विशेष पुरुष की नहीं होनी चाहिए। 'जो जोते वह काटे'।

यह सिद्धांत कहाँ तक व्यवहार में लाया जा सकता है, यह एक कठिन समस्या है। यदि जायदाद का प्रश्न उठा दिया जाए तो क्या मानवीय समाज अधिक सुख में हो जाएगा? यह एक टेढ़ा प्रश्न है, और कल्पना क्षेत्र के बाहर हमने अभी पग नहीं बढ़ाया। कल्पना में तो अनेक बातें भी की जा सकती हैं, परंतु कोई समाज या राष्ट्र केवल कल्पना की भित्ति पर खड़ा नहीं हो सकता। जायदाद यदि किसी मात्रा में आवश्यक है तो इसके सुसंगठित रखने का भी प्रश्न उपस्थित हो जाएगा। मैं यदि एक घर बनाता हूँ तो यह भी चाहता हूं कि यथाशक्ति बना रहे, क्योंकि उसका बना रहना न केवल वैयक्तिक ही, किंतु सामाजिक तथा राष्ट्रीय आवश्यकता है। यदि मेरे मरने के बाद मेरे चार लड़के एक मकान बराबर बराबर बांटने पर कटिबद्ध हो जाएँ, तो ईंट से ईंट बज जाए और किसी को भी कुछ लाभ न पहुंचे। यदि ४ बीघे जमीन के ४ टुकड़े किए जाएँ तो एक-एक बीघा बाँट में पड़े। यदि एक दुकान के चार टुकड़े किए जाएं तो किसके हाथ क्या लगे!

यह तो हुई एक पीढ़ी की बात। यदि इसी प्रकार उन चार लड़कों के चार-चार लड़के हैं, और इसी प्रकार पीढ़ी दर पीढ़ी बाँट होता चला गया तो कहाँ अंत होगा?

यह तो हुआ लड़कों के हिसाब से। अब लीजिए लड़कियों के हिसाब को। लड़कियों का विवाह दूसरे कुल में होता है और वैदिक संस्कृति के अनुसार दूर देश में भी 'दुहिता= दूरे हिता भवति।' अब यदि लड़कियाँ खेत या

मकान या दुकान बांट कर अपने-अपने साथ ले जाया करें तो पारस्परिक या जातीय, सब प्रकार की हानि होगी। दूसरी जातियों ने इसका उपाय कुछ और सोचा। मेरी समझ में ईसाई, मुसलमान आदि में एक ही कुल में विवाह करने की प्रथा इसलिए पड़ी कि लड़कियों को दायभाग के कुछ अंश का अधिकारी ठहराया गया।

चचेरी बहन के साथ विवाह करने में बहन जायदाद को दूरस्थ कुल में नहीं ले जाती। प्राचीन मिस्र में टाल्मी आदि के समय में राजवंश के लोग अपनी सगी बहन से विवाह करते थे। ब्रह्मा देश के पूर्व की कुछ जातियों में यह प्रथा कि जो राजा होता है वह अपनी सगी बहनों से विवाह कर लेता है। यदि विवाह की दृष्टि से देखा जाए तो यह विधान सर्वथा दोषयुक्त है।

विवाह का उद्देश्य उत्तम संतान है। एक परिवार या एक वंश में विवाह करना वैदिक धर्म में इसलिए वर्जित है कि शारीरिक और मानसिक विकास में बाधा पड़ती है। इसलिए वैदिक संस्कृति में उसे पाशविक कुप्रथा बताया है। भाई बहन का संबंध इतना पवित्र बताया गया है कि कोई वैवाहिक संबंध का विचार तक नहीं कर सकता। विस्तृत जानकारी हमने शांतिधर्मी के इससे पूर्व के महीनों में दे दी है। अतः शांतिधर्मी के सदस्य बन कर मंगवा कर पढ़ सकते हैं। लेख विस्तार भय से यहाँ इतना बताना ही प्रासंगिक है कि सगे बहन भाई की शादी अनेक रोगों का निमंत्रण है।

जो लोग मनुस्मृति को नष्ट करने पर तुले हुए हैं, उनको सोचना चाहिए कि मनु का एक-एक नियम कितनी घोर विपत्तियों की औषध है। जिन्होंने अपनी रियासत बचाने के लिए अपने घरानों में ही विवाह करना आरंभ कर दिया, उन्होंने रियासत को बचाकर भी मृत्यु को मोल ले लिया। सुधार का यह अर्थ नहीं है कि चूल्हे में से निकलकर भाड़ में कूद पड़ो। इसलिए दायभाग के नियम ही ऐसे बनाने चाहिए जिनसे सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। अथवा लाठी में कुछ खरोंच ही आ जाए, अर्थात् अधिक क्षति न होने पावे।

कुछ लोगों का विचार है कि जायदाद के झगड़े को ही मिटा दो। 'न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।' जायदाद नष्ट होते ही भाग के झगड़े भी समाप्त हो जाएंगे। जितनी जायदाद होगी वह जाति भर की। जाति जिसको जितनी आवश्यकता होगी, उतना दे देगी। यह सिद्धांत बहुत ही सुंदर और चित्ताकर्षक है, परंतु संस्कृत में एक कहावत है- दूराद् हि पर्वता रम्याः।।

अर्थात् पहाड़ दूर से ही सुंदर प्रतीत होते हैं। जो व्यवहार में नहीं आ सकती, उसकी मीमांसा से क्या लाभ? जो लोग भूल-भुलैयों को पसंद करते हैं, वे करते रहें। हम तो किसी को मूर्खों के स्वर्ग (Fools Paradise) की इच्छा करने का परामर्श नहीं दे सकते।

जायदाद वह चीज है जिसके स्थापित करने के लिए मनुष्य अपनी बुद्धि, शक्ति तथा अनेक शुभ गुणों का विकास करता है। यदि यह कामना न रहे तो लाखों पीछे एक-दो संन्यास वृत्ति वालों को छोड़कर शेष उदासीन, आलसी, प्रमादी तथा विषयी हो जाएंगे और जायदाद के होने से जो बुराइयां उत्पन्न हो रही हैं, उनसे सहस्र-गुणा उठ खड़ी होंगी। यह ठीक है कि कभी कभी आंख के फूटने से पीड़ा दूर हो जाती है, परंतु आँख को फोड़ डालना पीड़ा का इलाज नहीं है। मनु महाराज ने जायदाद को स्थापित रखने के लिए उपाय बताए हैं-

(१) जायदाद केवल लड़कों को ही मिले।

(२) लड़कियों को स्त्री-धन मिले।

इससे साधारणतया जाति की हानि नहीं, क्योंकि जो लड़की अपने पति के घर जाती है वह उस जायदाद की स्वामिनी बन जाती है जो उसके पति की है। इसी प्रकार उसके पिता की जायदाद उसके भाई को मिली, उस पर उसकी भौजाई का स्वत्व हो गया। इससे न तो जायदाद के टुकड़े हुए, न एक वंश में ही विवाह करने पड़े, न स्त्रियाँ ही अपने स्वत्व से वंचित रहीं। जहाँ बड़ी-बड़ी जायदाद हैं, जैसे- राज्य आदि; वहाँ के लिए और नियम बनाए। अर्थात् राज का अधिकारी ज्येष्ठ पुत्र हो। अन्य पुत्रों को गुजारा मिले। तात्पर्य यह है कि छोटी-छोटी जायदाद परिवारों की अपनी है, परंतु बड़ी रियासतें राजा की निज संपत्ति नहीं। वह तो प्रजा के हित के लिए प्रबंधक मात्र है। अत एव परिवार के लोगों को उसको बांटने का अधिकार नहीं, अन्यथा राज के टुकड़े होने से अनेक अनैतिक दोष उत्पन्न हो जाएंगे और जातीय एकता नष्ट हो जाएगी।

पुत्र न होने की अवस्था में पुत्रिका का नियम बनाया गया है। यास्क कहते हैं कि-अभ्रातृमतीवाद् इत्यपरम्। अर्थात् जिस लड़की के भाई नहीं हैं, उसके लिए अलग नियम हैं। मनुस्मृति में लिखा है-

अपुत्रोऽनेन विधिना सुतां कुर्वीत पुत्रिकाम्।
यदपत्यं भवेदस्यां तन्मम स्यात् स्वधारकम्।।

अर्थात् जिसके पुत्र न हों और जायदाद हो, वह अपनी लड़की को पुत्रिका बना ले। पुत्रिका उस पुत्री को कहते हैं, जो विवाह के बाद पति के घर नहीं जाती, किंतु पति ही उसके यहाँ आकर रहता है और उसकी संतान अपने नाना की जायदाद की दायभागी होती है।

(आगामी अंकों में जारी)

युवा मंच

आजाद भारत में आजादी के देवताओं का अपमान

❒आचार्य ज्ञानप्रकाश 'वैदिक'

आजादी के इतिहास में एक क्रांतिकारी, जिसने अंग्रेजों के विरुद्ध आजादी का जंग छेड़ दिया और शहीद-ए-आजम भगत सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई लड़ी। भगतसिंह को फांसी की सजा हो गई, पर यह देवता आजाद भारत में जिंदा रह गए। यही उनका दोष था! क्योंकि आजाद भारत में उनके साथ जो उपेक्षा का व्यवहार हुआ, उसको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

वह क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त थे। इनके नाम को कौन नहीं जानता! यह वही व्यक्ति थे, जिन्होंने भगतसिंह के साथ मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में वीरता का एक नया अध्याय जोड़ा। दिल्ली के नेशनल असेंबली में इन्होंने भगतसिंह के साथ बम फेंका। भगतसिंह के साथ इनको भी गिरफ्तार किया गया। इन दोनों क्रांतिकारियों पर केस चलाए गए। भगतसिंह को फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन बटुकेश्वर दत्त बच गए, क्योंकि इनको बहुत कुछ झेलना शेष था।

अंग्रेजी सरकार ने इनको उम्रकैद की सजा सुनाई और ये अंडमान निकोबार की जेल में भेजे गये, इन्हें कालापानी की घोर यातनाएं सहनी पड़ीं। इस दौरान उन्हें टी बी हो गई। वे मरते-मरते बचे। जब उनको पता चला कि भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी की सजा सुना दी गई है तो काफी निराश हुए। उनकी निराशा इस बात की नहीं थी कि उनके साथी अपनी आखरी सांस गिन रहे होंगे, किंतु उन्हें दु:ख इस बात का था कि वे फांसी लगने से क्यों बचे! इस बात की पीड़ा थी। इन्हें यह नहीं पता था कि आगे उनको और बहुत कुछ देखना है। कवि ने ठीक कहा-

उनकी तुरबत पे इक दिया भी नहीं,
जिनके खूं से रौशन है चरागे वतन।
आज जगमगाते हैं मकबरे उनके
जो बेचते थे शहीदों के कफन।।

कवि की यह बात उस समय सच हो गई, जब आजाद भारत में यह क्रांतिकारी रिहा होकर आया। उस समय जो उसको जीते जी तिरस्कार एवं अपमान सहन करना पड़ा, उसको इतिहास कभी माफ नहीं कर सकता। न ही उस समय के सत्तासीन लोगों को माफ कर सकता है, क्योंकि जिनको देश चलाने की जिम्मेदारी दी गई थी, उनका कर्तव्य था कि बटुकेश्वर दत्त जैसे क्रांतिकारियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और बाकी जीवन की आवश्यकताओं का ख्याल रखते। बटुकेश्वर ने कितनी बार सोचा होगा कि क्या इसी के लिए क्रांतिकारियों ने अपना जीवन बलिदान किया।

जो स्वतंत्र भारत में उनके साथ हो रहा था वह किसी अपराध से कम नहीं था।

यह नवम्बर सन १९४७ की बात है, जब उनकी शादी अंजनी देवी के साथ हुआ। इसके बाद उनको अपने घर और गृहस्थी चलाने में बहुत बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। इसके लिए आजादी के देवता ने एक सिगरेट कंपनी में एजेंट के रूप में नौकरी की और बाद में इस व्यक्ति ने बिस्कुट बनाने का एक छोटा सा कारखाना खोला, लेकिन नुकसान होने की वजह से बंद करना पड़ा। आप सोचकर दंग रह जायेंगे कि ये सब आजाद भारत में भारत के सबसे बड़े क्रांतिकारी के साथ हो रहा था। वह व्यक्ति अपने ही देश में आजादी के बाद यूं ही भटक रहा था। कोई इसकी खबर लेने वाला तक नहीं था। उसकी उपेक्षा का अंत यहीं तक नहीं रहा। उस समय तो अति हो गई जब परिस्थितियों के मारे उन्होंने पटना में बस के लिये परमिट बनाने का आवेदन किया। इसके लिये वे पटना कमिश्नर से मिलने गए। कमिश्नर ने उनसे स्वतंत्रता सेनानी होने का प्रमाण पत्र लाने को कहा। यह बात सुनकर उनका दिल टूट गया। सोचने को मजबूर हुए कि आज मुझे भारत में स्वतंत्रता सेनानी होने का प्रमाण पत्र देना पड़ेगा।

इस यह घटना का पता जब राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद

को लगा तो कमिश्नर ने उनसे जाकर माफी मांगी। लेकिन यह अपमान का सिलसिला यहीं तक सीमित नहीं रहा। जब बीमार होने के कारण उन्हें सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहाँ देख रेख ठीक न होने से बीमारी काफी गंभीर हो गई। इस हालत को देख कर उनके मित्र चमनलाल आजाद ने एक लेख लिखा। शब्द कुछ इस प्रकार के थे–

क्या दत्त जैसे क्रांतिकारी को भारत में जन्म लेना चाहिए? परमात्मा ने इतने महान शूरवीर को हमारे देश में जन्म देकर भारी गलती की है। खेद है इस बात का कि जिस व्यक्ति ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए प्राणों की बाजी लगा दी और जो फांसी से बाल–बाल बचा। आज वह दयनीय स्थिति में अस्पताल में पड़ा हुआ एडियां रगड़ रहा है, और उसे कोई पूछने वाला तक नहीं है।

इस लेख के अखबारों में छपते ही सत्ता में बैठे लोगों के कानों पर जूँ रेंगी और उस समय की पंजाब सरकार उनकी मदद के लिए सामने आई। लेकिन तब तक बटुकेश्वर दत्त की हालात काफी बिगड़ चुकी थी। उन्हें २२ नवंबर १९६४ को दिल्ली लाया गया। उस समय उनसे मिलने कुछ पत्रकार आए। पत्रकारों के जवाब देते हुए बटुकेश्वर दत्त रो पड़े और कहा कि मैंने सपनों में भी नहीं सोचा था कि उस दिल्ली में आना पड़ेगा जहाँ मैंने और भगतसिंह ने बम डाला था। वहाँ आज एक अपाहिज की तरह स्ट्रेचर पर लादकर लाया जाऊंगा! यह करते हुए रो पड़े। उन्हें सफदरजंग अस्पताल में भर्ती किया गया था। फिर उनको एम्स में ले जाया गया, यहां जांच के बाद पता चला कि उन्हें कैंसर हो गया है और बस कुछ ही दिन उनके पास बचे हैं।

बीमारी काल में अपने साथी भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को याद करके अक्सर रो पड़ते थे। जब आखरी समय था, उस वक्त भगतसिंह की मां विद्यावती जी अस्पताल में उनसे मिलने आईं। उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा प्रकट की कि मृत्यु के पश्चात् उनका अंतिम संस्कार भगतसिंह आदि साथियों की समाधि के बगल में किया जाए। २० जुलाई १९६५ की रात १ बजे। भारत मां के इस महान सपूत ने दुनिया से विदा ली। और उनकी अंतिम इच्छा के अनुसार अंतिम संस्कार भारत पाक सीमा के करीब हुसैनीवाला में भगतसिंह आदि क्रांतिकारियों की समाधि के पास किया गया। श्रीमती विरेन्द्र कौर सन्धू के अनुसार १९६८ में जब ८६ वर्षीय वीर मां विद्यावती जी भगतसिंह आदि क्रांतिकारियों के समाधि स्थल का उद्घाटन करने गई तो उन्होंने सर्वप्रथम बटुकेश्वर दत्त की समाधि पर फूलों का हार चढ़ाकर कहा था कि बटुकेश्वर दत्त की यही इच्छा थी कि मुझे भगतसिंह से अलग न किया जाए।

वह वीर सपूत तो चला गया, लेकिन एक प्रश्न सदा के लिए देशवासियों के लिए छोड़कर गया। क्या इसके लिए ही बटुकेश्वर दत्त जैसे क्रांतिकारियों ने फांसी या काला पानी की सजा और यातनाओं को झेला था कि आजाद भारत में उस जैसे क्रांतिकारियों को अपना जीवन अपमान और तिरस्कारपूर्वक जीना पड़ेगा। यह है भारत माता की सच्चे सपूत बटुकेश्वर दत्त की मर्मान्तक कथा, जिसे पढ़ सुनकर हृदय द्रवित हो जाता है।

गुरुत्वाकर्षण के प्रथम अन्वेषक न्यूटन नहीं

गुरुत्वाकर्षण बल के बारे में हम सभी जानते होंगे कि इस शक्ति के कारण ही पृथ्वी सभी पदार्थों को अपनी ओर आकर्षित करती है, और कहा जाता है कि यूरोपवासी एसेक न्यूटन ने सर्वप्रथम इसको जाना, तब से यह विद्या पृथिवी पर फैली है, तथा कुछ लोग यह भी मानते हैं कि न्यूटन से भी हजारों वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण की खोज भास्कराचार्य जी ने की थी।

ये दोनों ही बातें यथार्थ नहीं हैं। इसका प्रमाण यह है कि भास्कराचार्य जी द्वारा प्रणीत सिद्धांत शिरोमणि नामक ग्रंथ में भास्कराचार्य जी ने स्वयं एक प्राचीन भारतीय आचार्य का श्लोक उद्धृत किया है जो गुरुत्वाकर्षण बल को भलीभांति बतला रहा है। वह इस प्रकार है कि–

आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत्खस्थं गुरु स्वाभिमुखी करोति।
आकृष्यते तत्पततीव भाति समे समन्तात् कुरियं प्रतीतिः।।

अर्थात् सर्व पदार्थगत एक आकर्षण शक्ति विद्यमान है, जिस शक्ति से यह पृथ्वी आकाशस्थ पदार्थ को अपनी ओर करती है, और जो यह खींच रही है, वह गिरता मालूम होता है। अर्थात् पृथ्वी अपनी ओर खींच कर आकाश में फेंकी हुई वस्तु को ले आती है, इसको लोक में गिरना कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि भास्कराचार्य से बहुत पूर्व यह विद्या देश में विद्यमान थी।

(वैदिक विज्ञान, पृष्ठ २१,
लेखक : पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ)

प्रसारक : गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ–२५०००१

तीन ऋणों को उतारने का व्रत बंधन है यज्ञोपवीत

लेखकः- स्व० पं० यशपाल आर्यबंधु, वैदिक प्रवक्ता, आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद-२४४०३२

आर्य संस्थाओं में जब बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन होता है, तब यजमानों को यज्ञोपवीत धारण कराये जाते हैं। किन्तु इसके महत्त्व को न समझने वाले लोग यज्ञ के बाद उसे उतार फैंकते हैं। यह आर्योचित व्यवहार नहीं। यज्ञोपवीत के महत्त्व को समझकर उसे निष्ठापूर्वक धारण किया जाना चाहिये। आज का पढ़ा-लिखा नवयुवक प्रायः पूछ लेता है कि यज्ञोपवीत क्यों धारण करें? अतः इसका समाधान देना उचित समझते हैं।

संस्कारों से ही (विशेषतया यज्ञोपवीत संस्कार से) मनुष्य द्विज कहलाने का अधिकारी बनता है। यज्ञोपवीत धारण करके ही वह गुरुजनों से शिक्षा ग्रहण करता है। जो मन्दबुद्धि शिक्षा ग्रहण करने की योग्यता न रखता हो, उसे शूद्र कहते हैं। कोई भी सुशिक्षित व्यक्ति मात्र इसलिये शूद्र नहीं होता कि उसने शूद्र के घर जन्म लिया है। ऐसे सुशिक्षित व्यक्ति को बड़े गर्व के साथ यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। इससे उसका गौरव और सम्मान बढ़ेगा।

यज्ञोपवीत क्या है?

यज्ञोपवीत विद्या का चिह्न और यज्ञ करने-कराने के अधिकार-पत्र के समान है। यह वैदिक संस्कृति का पावन प्रतीक है। यज्ञोपवीत तीन धागों का एक त्रिसूत्र है जो विद्या ग्रहण करने, यज्ञादि शुभकर्म सम्पादित करने तथा पवित्र एवं दिव्य जीवन जीने के संकल्प के साथ अपने बायें कंधे पर धारण किया जाता है और दायें हाथ के नीचे रहता है। इस प्रकार धारण करने से यज्ञोपवीत हर समय हमारे हृदय को छूता रहता है और हमें अपने कर्त्तव्यों की याद दिलाता रहता है। यज्ञोपवीत पवित्र एवं यज्ञीय जीवन जीने का व्रतबंध है।

प्रत्येक मनुष्य तीन ऋणों से ऋणी रहता है। वे तीन ऋण हैं- देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र इन्हीं तीन ऋणों के प्रतीक हैं। हमें अपने जीवन में इन तीन ऋणों को चुकाने का सदैव प्रयत्न करते रहना चाहिये। इन ऋणों को चुकाने के जो वैदिक उपाय हैं, उन्हें भी जान लें।

देवऋणः- हमारा जीवन जिन प्राकृतिक तत्त्वों पर निर्भर है वे हैं- आकाश, वायु, अग्नि (सूर्य, चन्द्र, बिजली) जल, पृथ्वी तथा उस पर उगने वाले घने जंगल, पेड़, पौधे, वनस्पति, औषधि आदि। इन्हीं तत्त्वों से हमारा जीवन प्रभावित होता है, क्योंकि जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, उसका निर्माण इन्हीं पदार्थों से होता है। पर्यावरण जितना शुद्ध होगा, हमारा स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा। पेड़ पौधे आदि पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं। हमें इन की रक्षा करनी चाहिये। यह सब सुरक्षित रहेंगे तो पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी तथा इनका सबका अधिष्ठान आकाश आदि पदार्थ दिव्यगुण युक्त हैं। दीप्तिमान् तथा दिव्यगुण वाले होने से तथा प्राणियों को जीवन देने वाले होने से इन्हें देव कहा गया है। इन देवों के प्राणी मात्र पर अगणित उपकार है। इन उपकारों के कारण हम इनके ऋणी हैं। यज्ञोपवीत का प्रथम सूत्र इसी ऋण की याद दिलाता रहता है। दिव्य गुण वाले होते हुए भी ये देव जड़ हैं। इन देवों की पूजा करने से इनका ऋण चुकाया जाता है। पर इनकी पूजा धूप, दीप, नैवेद्य अथवा भोग लगाने या आरती उतारने से नहीं होती। इनकी पूजा करनी है तो दो काम करने होंगे। १) इन्हें विकृत न होने दें। २) देवयज्ञ द्वारा इनका निरन्तर शोधन करते रहें। पर्यावरण के प्रदूषण की निवृत्ति का देवयज्ञ से बढ़कर कोई अन्य उपाय संसार अब तक नहीं खोज पाया है। देवयज्ञ ही वास्तविक देवपूजा है। यज्ञोपवीत लेते समय हम नित्य देवयज्ञ आदि करने का व्रत लेते हैं। जब घर-घर में यज्ञ हवन होते रहेंगे तो पर्यावरण शुद्ध एवं स्वास्थ्यप्रद रहेगा। आज की इस औद्योगिक सभ्यता के युग में यज्ञ करना भोजन करने से भी अधिक आवश्यक है। यह युग की पुकार है। यज्ञोपवीत युग की इसी पुकार का प्रतीक है।

हमारे संस्कृत तथा वैदिक साहित्य में विद्वानों को भी देव कहा गया है। ये चेतन देव भी दिव्यगुण सम्पन्न होते हैं। भौतिक जगत् में जिस प्रकार सूर्य देव संसार का अंधकार हर लेता है, उसी प्रकार आत्मिक जगत् में विद्वान् अविद्या -अंधकार को हर लेता है और ज्ञान का प्रकाश कर देता है। जो हमारा अज्ञान हर ले और हमें ज्ञानी बना दे, उसके उपकारों का स्मरण न करना कृतघ्नता है। हम इन विद्वानों, गुरुजनों, देवों के ऋणी हैं; अतः हमें इनकी पूजा, सत्कार, सम्मान तथा हर प्रकार से सेवा अवश्य करनी चाहिये, इसी उपाय से इनका ऋण चुकाया जा सकता है। हमें इन देवों के बताये वेदोक्त मार्ग पर स्वयं चलना चाहिये तथा अन्यों को यही मार्ग अपनाने के लिये सदैव प्रेरित करते रहना चाहिये।

यही देवऋण चुकाने का वैदिक मार्ग है।

ऋषिऋणः– दूसरा ऋण है ऋषिऋण। ऋषियों का मानव जाति पर बहुत भारी ऋण है। ऋषि मंत्रद्रष्टा तथा ज्ञान का प्रसारक होता है। ज्ञान और वाणी का स्वामी बृहस्पति परमेश्वर हर कल्प के आदि में अपार दया से प्रेरित होकर मानवमात्र के कल्याण के लिये मानवोपयोगी ज्ञान वाणी सहित प्रदान करता है। इस ईश्वरीय ज्ञान को पवित्र हृदय वाले ऋषि ग्रहण करते हैं। फिर वे उस भाषामय ज्ञान को प्रभु प्रेरणा से अपने मुख से उच्चारण कर अन्यों को सुनाते हैं। अन्य ऋषि उस शब्दमय ज्ञान को अपने कानों से सुनकर अन्यों को सुनाते हैं। सृष्टि के आदि से यह ज्ञान ऋषिगण ही सुनते–सुनाते हम तक लाये हैं। उन्होंने इस कर्त्तव्य के निर्वहन में लेशमात्र भी प्रमाद नहीं किया। न ही इस ज्ञान को विकृत होने दिया। उन्होंने ही समाधिस्थ अवस्था में मंत्रों के अर्थों का साक्षात्कार किया, जाना और अन्यों को जनाया। अतः मानव जाति पर उनके अगणित उपकार हैं। हम सब उनके इस उपकार के लिये ऋणी हैं। यज्ञोपवीत का दूसरा सूत्र हमें इसी ऋण की याद दिलाता रहता है। ऋषिगण ईश्वरीय ज्ञान की जो धरोहर हमें सौंप गये हैं, हम उसे सदैव सुरक्षित रखें, उसे लुप्त न होने दें। वह ज्ञान सुरक्षित रहे, कभी लुप्त न हो, इसके लिये हमें वेद को पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना रूपी परम धर्म का पालन करना होगा। स्वाध्याय से ही ऋषियों को तृप्त किया जाता है। ऋषियों की तृप्ति ही उनकी पूजा है। ऋषियों ने ही हमारे लिये वेदों के व्याख्या ग्रंथ बनाये। हमें वेदज्ञान के साथ–साथ ऋषियों के इन व्याख्या ग्रंथों का भी स्वाध्याय और संरक्षण करना चाहिये। आज ऋषिगण हमारे मध्य नहीं है किन्तु उनका पावन ज्ञान विद्यमान है। साथ में विद्यमान हैं उन ऋषियों की विचारधारा तथा वेदवाणी का प्रचार–प्रसार करने वाले अनेक वेदोपदेशक, संन्यासी, लेखक तथा वैदिक ग्रंथों के प्रकाशक परोपकारी महानुभाव। हमें उनका भी यथोचित सम्मान और सत्कार करना चाहिये। आर्ष परम्परा के गुरुकुलों के त्यागी, तपस्वी आचार्यों का भी उसी प्रकार का सम्मान और सत्कार करना चाहिये तथा उनके द्वारा संचालित गुरुकुलों की भरपूर सहायता और संरक्षण देना चाहिये, अन्यथा आर्ष–ज्ञान लुप्त होने की संभावना हो सकती है। तात्पर्य यह कि जैसे भी हो, सृष्टि के आदि से अब तक सुरक्षित चला आ रहा पावन ज्ञान आगे भी सुरक्षित रहे, ऐसे उपाय किये जाने चाहियें। यही ऋषिऋण चुकाने का एकमात्र उपाय है।

पितृऋण– तीसरा ऋण है पितृऋण, जिसका सम्बन्ध माता–पिता, दादी–दादा आदि जीवित पितरों से है। माता–पिता सन्तान को जन्म देने, उनके पालन–पोषण तथा पढ़ाने–लिखाने में कितना कष्ट उठाते हैं, उन सबका वर्णन करने में लेखनी असमर्थ है। स्वयं अभावों और कष्टों में रहकर भी वे सन्तान के लिये हर सुख–सुविधा उपलब्ध कराते हैं। यदि सन्तान पर थोड़ा सा भी कहीं कष्ट आ जाये तो माता–पिता तड़प उठते हैं। इस प्रकार माता–पिता आदि पितरों के हम पर बहुत उपकार हैं। हम उनके अत्यन्त ऋणी हैं। यज्ञोपवीत का तीसरा सूत्र हमें इसी ऋण की याद दिलाता रहता है।

माता–पिता के ऋण चुका पाना सम्भव नहीं, फिर भी माता–पिता, दादी–दादा आदि पितरों की सेवा, सुश्रूषा, सत्कार तथा सम्मान देना सन्तान का प्रमुख कर्त्तव्य तथा परम धर्म है। अपने वृद्धजनों को कभी भी उपेक्षित तथा अभावग्रस्त न होने दें। वृद्धावस्था में होने वाले नाना कष्टों से अपने बुजुर्गों को यथासम्भव बचा लेना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिये। पुत्र वही है जो माता–पिता आदि जीवित पितरों को दुःखरूप नरक से बचा ले, यही सच्चा श्राद्ध और तर्पण है। माता–पिता आदि की आज्ञाओं का ही नहीं, उनकी इच्छाओं का भी सम्मान करें। उनकी अवहेलना करना महापाप है। उनसे तीखा बोलने, अपमानित या प्रताड़ित करने की भूल कदापि न करें। भविष्य में कभी आपके साथ भी ऐसा न हो। कवि की सीख याद रखें–

भूल मत तेरी भी औलाद बड़ी होगी कभी,
तू बुजुर्गों को खरी–खोटी सुनाता क्यों है?

उपर्युक्त तीनों ऋणों को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना प्रत्येक मानव का पुनीत कर्त्तव्य है और उन्हें न मानना अथवा न चुकाना कृतघ्नता है। यज्ञोपवीत न धारण करना एक प्रकार से इन ऋणों से मुकरना ही तो है। अतः यज्ञोपवीत धारण कर शालीनता का परिचय देते हुए अपने कर्त्तव्य कर्मों पर ध्यान दें। इससे आपका अपना गौरव बढ़ेगा।

शांतिधर्मी परिसर नरवाना मार्ग जींद में
(निकट शिव धर्मशाला)
पूर्णिमा यज्ञ महोत्सव
21 जनवरी 2019 सोमवार सायं 3 बजे से
आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।
❖यज्ञ ❖भजन ❖अध्यात्म चर्चा
निवेदक : वैदिक प्रचार समिति
सम्पर्क : 9996338552, 9896412152, 9416253826

जीवन का उद्देश्य और उसे प्राप्त करने के उपाय

❑अध्यापक देवराज आर्य,
आर्य टैण्ट हाऊस, रोहतक मार्ग जींद-१२६००१

सं गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। ऋ०

(सं गच्छध्वं) हे मनुष्यो! परमेश्वर हम सभी के लिए धर्म का उपदेश करता है कि देखो जो पक्षपातरहित न्याय सत्याचरण से युक्त धर्म है, तुम लोग उसी का ग्रहण करो। उससे विपरीत कभी मत चलो, किन्तु उसी की प्राप्ति के लिए विरोध को छोड़ के परस्पर सम्मति में रहो, जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सदैव बढ़ता जाये और किसी प्रकार का दु:ख न हो। अर्थात् आपस मे मिलकर चलने और काम करने से ही कल्याण होता है। **(संवदध्वं)** तुम लोग विरुद्ध वाद को छोड़कर आपस में प्रीति के साथ वाद-विवाद पढ़ना-पढ़ाना, प्रश्न उत्तर सहित संवाद किया करो, जिससे तुम्हारी सत्य विद्या नित्य बढ़ती रहे। ज्ञान की वृद्धि होने से ही तुम्हें सुखविशेष प्राप्त होगा। तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते रहो, जिससे तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होकर पुरुषार्थ को बढ़ाता रहे और तुम लोग ज्ञानवान् होकर नित्य आनन्द में रहो, तुम लोगों को सदा धर्म का ही सेवन करना चाहिये तथा तुम्हारी प्रवृत्ति अधर्म की ओर कभी न हो। **(देवाभागं यथापूर्वे०)** जैसे पक्षपातरहित धर्मात्मा विद्वान् लोग वेद रीति से सत्यधर्म का आचरण करते आये हैं, उसी प्रकार तुम भी करो; क्योंकि धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है। एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा, दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेद विद्या को जानने से ही मनुष्यों को सत्य असत्य का यथावत् बोध होता है, अन्यथा नहीं। अर्थात् तुम्हारा सब पुरुषार्थ सब जीवों के सुख के लिये सदा हो। जो न्याय अर्थात् पक्षपात को छोड़ कर सत्य का आचरण और असत्य का परित्याग करना है, उसी को धर्म कहते हैं, जिसके आचरण करने से संसार में उत्तम सुख और नि:श्रेयस् अर्थात् मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

आदरणीय बन्धुओ- इस संसार में अनेक प्रकार के प्राणी पशु-पक्षी, कीट-पतंग तथा अन्य अति सूक्ष्मजीव जन्तु आदि भरे पड़े है परन्तु इन सभी प्राणियों में मनुष्य को अति श्रेष्ठ अर्थात् उत्तम बताया गया है; क्योंकि इस मानव शरीर को प्राप्त करके ही मनुष्य लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति कर सकता है। बुद्धि और ज्ञान के द्वारा यह इस जीवन को सुखी बना सकता है तथा परलोक के सुन्दर निर्माण की योजना बनाने का मार्ग भी इसके लिए खुला है। वह सांसारिक भोगों को भोगते हुए आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा मोक्ष पद तक पहुँच सकता है। यह सौभाग्य केवल मनुष्य को ही प्राप्त है, यही मानव जीवन की अन्य प्राणियों से श्रेष्ठता है। महर्षि व्यास कहते हैं-'न ही मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्' अर्थात् मनुष्य जीवन से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं है। इस दुर्लभ मनुष्य देह को पाकर भी जो संसार सागर से पार उतरने का साधन नहीं करता, उससे अधिक पापी और अभागा कौन होगा!

उत्तम मानव शरीर को प्राप्त करके इसकी रक्षा अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।' शरीर ही धर्म के सभी कार्य करने का साधन या माध्यम है। यह मनुष्य शरीर एक अमूल्य रत्न है, इसके महत्त्व को समझो और इसे व्यर्थ न जाने दो, क्योंकि मनुष्य जन्म पाना सरल नहीं है। अनेक जन्मों में किये शुभ कार्यों के कारण यह मनुष्य जीवन प्राप्त होता है। देह के बिना कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकता इसलिए शरीर और धन की रक्षा करके पुण्य अर्जित करना चाहिए। रक्षा किया हुआ शरीर व धन, धर्म के लिए होना चाहिए, धर्म ज्ञान के लिए, ज्ञान योग के लिए। योग द्वारा ही मनुष्य मुक्ति को प्राप्त होकर संसार सागर से पार हो जाता है।

प्रश्न पैदा होता है कि वह योग क्या है? जिसके द्वारा हम उस मुक्ति सुख को प्राप्त कर सकें। संसार सागर से पार उतरने के लिए किन-२ साधनों का करना आवश्यक है? जीवन का उद्देश्य तथा उसकी प्राप्ति के उपाय कौन से हैं। इन्हीं बातों पर इस लेख में विचार किया जायेगा।

इस संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं- ईश्वर, जीव

और प्रकृति। जिस सत्ता के द्वारा यह सारा ब्रह्माण्ड चलायमान है तथा प्रत्येक जीव जन्तु कर्मानुसार जन्म धारण कर अपनी-२ योनियों को प्राप्त होते हैं, उसकी न्यायव्यवस्था से कर्मों के फलों को भोगते हैं तथा नियमानुसार यह जड़ प्रकृति कार्य कर रही है, उस परमशक्तिमान् का नाम ईश्वर है, जिसे हम सच्चिदानन्दस्वरूप कहते हैं। वह परमात्मा सत् है। इसी के साथ वह चेतन तथा आनंद से भरपूर है। आकाश के तुल्य सर्वत्र व्याप्त, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ एवं न्यायकारी भी है। इसी के साथ वह परम दयालु भी है, जिसमें क्लेश, अज्ञान, दुःख कुछ भी नहीं होता। वही ईश्वर सदा स्तुति, प्रार्थना और उपासना करने के योग्य है। उसी को जानकर मनुष्य दुःखों, कष्टों और क्लेशों से मुक्त होकर अपने जीवन के लक्ष्य को प्राप्त होता है, अन्यथा नहीं।

जिस प्रकार उस परमात्मा की सत्ता से संसारचक्र चल रहा है, उसी प्रकार इस जीव की सत्ता से ही यह शरीर चलायमान है। इसके बिना इस शरीर का कोई मूल्य नहीं है। और इस जीवात्मा का स्वरूप है- सत् चित् अर्थात् यह जीवात्मा सत् भी और चेतन भी। तभी तो प्राणी जीवित हैं तथा बुद्धि और ज्ञान के अनुसार अपने-२ कार्य करते हैं। परमात्मा ने मनुष्य को कर्म करने की स्वतंत्रता दी है। तभी तो यह 'कर्म योनि' के अंतर्गत रहकर जहाँ पिछले जन्मों में किये गये कर्मो के फल को भोगता है, साथ ही नये कर्म करने की भी उसे छूट है, परन्तु दूसरे जीव-जन्तु केवल पिछले जन्मों में किये गये कर्मों के फल को भोगते हैं इसलिए इन्हें 'भोग योनि' के जीवों को श्रेणी कहते हैं। इन्हें नये कर्म करने की स्वतंत्रता नहीं है।

जिस प्रकार ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप है, जीव सत् चित् है उसी प्रकार प्रकृति केवल सत् है। प्रकृति न तो चेतन है और न ही प्रकृति में आनंद है। उसकी केवल सत्ता है जो हमे निरंतर अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश से बने शरीर और सांसारिक पदार्थों में दृष्टिगोचर होती है। प्रकृति के चेतन न होने पर भी इसके बिना कोई कार्य व्यवहार नहीं चल सकता, परंतु जड़ होने के कारण यह स्वयं कोई कार्य नहीं कर सकती। प्रकृति के बने पदार्थों से ही हमारा जीवन चक्र चलता है। जीवन के सभी भोग प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। परन्तु यहाँ आकर मनुष्य भूल कर बैठता है और यह समझने लगता है कि इस संसार और शरीर को चलाने वाली कोई सत्ता नहीं हैं। यह संसार अपने आप ही चल रहा है तथा इस शरीर को भी सभी भोग स्वयं प्राप्त हो रहे हैं। इन सब बातों के लिए परमात्मा और आत्मा की कोई जरूरत नही है। इसी भूल का यह परिणाम है कि मनुष्य उस जगत् नियन्ता की कर्म-फलभोगव्यवस्था को न समझ कर अनेक प्रकार के अनैतिक, अव्यावहारिक, दुराचार, भ्रष्टाचार, छल, कपट, हिंसा व चोरी आदि के पाप कार्यों मे लिप्त होकर निरन्तर स्वयं का पतन करते चले जाते हैं। शायद ऐसे लोग यह समझते हैं कि प्रकृति के भोगों को प्राप्त करने का मुझे ही अधिकार प्राप्त हो गया है।

आज संसार में जितने भी पाप व भ्रष्टाचार के कार्य बढ़ते जा रहे हैं, वे सभी आत्मा और परमात्मा की सत्ता को न मानने के कारण ही हैं। ऐसे लोग यह नहीं समझते कि जीव कर्म करने मे स्वतंत्र, परन्तु कर्मों के फल भोगने में परतन्त्र है। जो व्यक्ति जिस प्रकार के कर्म करता है उसको परमपिता परमात्मा की न्याय व्यवस्था से उसी प्रकार के फल भोगने पड़ते हैं। यदि ऐसा न होता तो सभी जीवों को समान भोग प्राप्त होने चाहियें थे, परन्तु ऐसा तो नहीं है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जैसे जीव कर्म करता है वैसे ही फल भोगने हेतु संसार सागर के चक्र मे फँस जाता है।

संसार रूपी महासागर में काम, क्रोध, मोह, लोभ रूपी बडे-२ ग्राह; ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट रूपी जीव जन्तु रहते हैं तथा तृष्णा रूपी अनेक तरंगें उठती हैं, जिन्हें देख कर यह मनुष्य घबरा उठता है तथा अपनी रक्षा के लिए उस परमपुरुष को पुकारता है जो सदा से इस आत्मा का बन्धु बनकर साथ रहता आया है 'स नो बन्धुर्जनिता स विधाता'। वह परमात्मा हमारा बन्धु के समान सहायक, सकल जगत् का उत्पादक है। वही सब कामों को पूर्ण करने वाला है। उसको जानकर अर्थात् प्राप्त करके मनुष्य दुःखों, कष्टों और क्लेशों से मुक्त हो जाता है, जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। वास्तव में योग द्वारा ही उस परमात्मा को जाना जा सकता है। योग का मुख्य प्रयोजन ईश्वर साक्षात्कार है। यही संसार सागर से पार कराने वाली नौका है।

योग क्या है? योग दर्शन के रचयिता महर्षि पतंजलि के अनुसार चित्त की वृत्तियों को रोककर ईश्वर, जीव प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को जानकर, ईश्वर के स्वरूप का साक्षात्कार करना योग है। योग 'समाधि' को कहते हैं। 'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः।' चित्त की वृत्तियों का निरोध- रुक जाना योग कहलाता है। योग के आठ अंग हैं तथा वैराग्य, अभ्यास और उच्च स्तरीय ईश्वर प्रणिधान ये योग साधन के उपाय हैं। योग का अभ्यास करते २ जब योगी योग की परिपक्व अवस्था में पहुँच जाता है, उस समय ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान तथा अविद्या, अधर्म, कुसंस्कार, समस्त दुःखों की समाप्ति एवं नित्यानंद की प्राप्ति होती है।

सर्व वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

डिप्रेशन या अवसाद क्या है

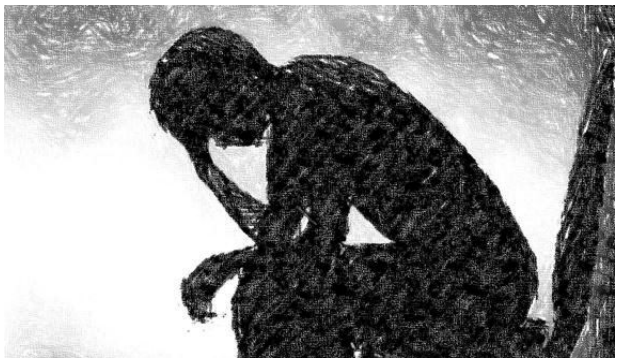

❒संजय कुमार कुरुक्षेत्र
kumarsanjay55555@gmail.com

जीवन में कभी-कभार उत्साह हीन महसूस करना एक सामान्य बात है, लेकिन जब यह अनुभव बहुत समय तक बना रहे तो यह अवसाद हो सकता है। ऐसे में जीवन बड़ा नीरस और खाली-खाली सा लगने लगता है। ऐसे में न दोस्त अच्छे लगते हैं और न ही किसी और काम में मन लगता है। जीवन उद्देश्य रहित लगने लगता है और अच्छी बातें भी बुरी लगने लगती हैं। यदि आपके साथ भी ऐसा होता है तो घबराने की जरुरत नहीं है। जरुरत है डिप्रेशन के लक्षणों और कारणों को समझने की और फिर उसका इलाज करने की। हम सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी सफलता मिलने पर बहुत खुशी मिलती है तो कभी असफल होने पर इंसान दु:खी हो जाता है।

कई बार लोग छोटे-मोटे दु:ख को भी अवसाद का नाम दे देते हैं, जो कि बिल्कुल गलत है। यह सामान्य उदासी से बहुत अलग होता है। आइये इसकी परिभाषा को समझते हैं। अवसाद एक ऐसी मानसिक स्थिति या दीर्घकालीन मानसिक विकार है जिसमें व्यक्ति को उदासी, अकेलापन, निराशा, कम आत्मसम्मान और जीवन से निराशा महसूस होती है। इसके संकेत- समाज से कटना, कम भूख लगना और अत्यधिक नींद आना या नींद बिल्कुल न आना में नजर आते हैं।

ध्यान देने की बात है कि आम तौर पर होने वाले तनाव या दु:ख का अवसाद से सीधे-सीधे कोई लेना-देना नहीं है। पर जब यह तनाव या दु:ख लगातार बना रहे, तब यह डिप्रेशन में बदल सकता है।

अवसाद के लक्षण

आपको नीचे दिए गए लक्षण आपके साथ मिलते दीखते हैं तो आपके डिप्रेशन में होने की सम्भावना है-

❖नींद नहीं आती या बहुत अधिक नींद आती है।
❖आप ध्यान नहीं केन्द्रित कर पाते और जो काम आप आसानी से कर लेते थे, उन्हें करने में कठिनाई होती है।
❖आप आशाहीन और उत्साहहीन महसूस करते हैं।

यदि आपको लगता है कि आप डिप्रेशन में जा रहे हैं तो इस बात को छुपाइये नहीं, और न ही इसको लेकर हीन महसूस कीजिये, क्योंकि यह एक बहुत ही सामान्य मनोरोग है, इसे छिपाना इसे बढ़ावा देने जैसा है।

❖आप चाहे जितनी कोशिश करें पर अपनी गलत सोच को नहीं रोक पाते हैं।
❖या तो आपको भूख नहीं लगती या बहुत ज्यादा खाते हैं।
❖आप पहले से कहीं जल्दी खीज जाते हैं या आक्रामक हो जाते हैं, और गुस्सा करने लगते हैं।
❖पहले आप कभी-कभी शराब पीते थे अब आप ज्यादा शराब पीते हैं।
❖आपको लगता है कि जिन्दगी जीने लायक नहीं है और आपके मन में आत्महत्या के विचार आते हैं। (ऐसा है तो तुरंत इलाज कराएं)

अवसाद का कोई सर्वमान्य कारण नहीं है और सर्वमान्य इलाज भी नहीं है। आधुनिक मनोविज्ञान का मानना है कि दुनिया मे प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी डिप्रेशन से जरूर प्रभावित होता है, पर प्रत्येक को हमेशा चिकित्सा की जरूरत नहीं पड़ती, परंतु आयुर्वेद इसे स्वीकार नहीं करता। हमारे ऋषि लिखते हैं कि जो प्रतिदिन योगसाधना करता है, जिसके मन में रजोगुण व तमोगुण का प्रभाव कम हो गया है, उन्हें कोई मनोरोग नहीं होता।

अवसाद की पहचान:-

पुरुषों, महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों में अवसाद अलग-अलग तरह से होता है। इसके बारे में जागरूकता रखना, समस्या को सही तरीके से समझने और उसका निवारण करने में मदद करता है।

पुरुष थके होने, चिड़चिड़ा होने, नींद न आने, काम में मन न लगने जैसी शिकायतें करते हैं। अवसाद के कुछ और लक्षण जैसे कि गुस्सा आना, आक्रामक होना, हिंसा करना, लापरवाह होना और अधिक शराब पीना भी

ऐसे पुरुषों में देखे जा सकते हैं। हालांकि महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा अवसादग्रस्त होने की संभावनाएँ दोगुनी होती हैं, पर पुरुषों में आत्महत्या की प्रवृत्ति ज्यादा होती है। महिलाओं में डिप्रेशन की समस्या हारमोन से सम्बन्धित भी होती है, महिलाओं में अवसाद के लक्षण ज्यादा खाने, ज्यादा सोने, वजन बढ़ने, अपराध-बोध होने, निराश होने के रूप में नजर आते हैं।

डिप्रेशन के कारण :-

कुछ बीमारियों के सटीक कारण होते हैं, जिससे उनका इलाज आसान हो जाता है, लेकिन डिप्रेशन थोड़ी जटिल बीमारी है। यह सिर्फ मस्तिष्क में हो रहे रसायन के स्राव में परिवर्तन की वजह से ही नहीं, बल्कि कई अन्य जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारणों से भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह आपकी जीवनचर्या, आपके सम्बन्ध, आप समस्याओं को कैसे हल करते हैं; इन बातों की वजह से भी हो सकता है, पर कुछ कारक डिप्रेशन होने की संभावनाएं बढ़ा देते हैं, यथा- अकेलापन सामाजिक सहयोग की कमी, वित्तीय समस्याएं, हाल में हुए तनावपूर्ण अनुभव, वैवाहिक या अन्य रिश्तों में खटास, खराब बचपन, शराब या अन्य नशीली दवाओं का सेवन, बेरोजगारी, अधिक कार्यभार आदि।

यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि डिप्रेशन का कारण क्या हैं, परन्तु कुछ कारण ये होते हैं-

१- आज के समय में डिप्रेशन का सबसे बड़ा कारण है बेरोजगारी। लंबे समय तक योग्यता के अनुरूप रोजगार न मिलने से निराश होना स्वाभाविक है।

२- मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि लवर या लवरी द्वारा रिजेक्ट करना भी डिप्रेशन का कारण है। मेरी जानकारी में बहुतों ने प्रश्न पूछा कि मेरा लवर या लवरी ने मुझे रिजेक्ट कर दिया या जिससे मैं प्यार करता था उसे कोई दूसरा उड़ा ले गया, अब आत्महत्या करने को मन कर रहा है। हंसी रोककर उसे समझाना पड़ता है। उनकी बात से तो ऐसा लगता है कि उनकी माँ मर गई हो।

३- पति द्वारा पत्नी को संतुष्ट न रख पाना - इस तरह की स्थितियों में पत्नी की मांगें पूरी न करने से पत्नी के तानों से परेशान पति आत्महत्या तक कर लेता है। ऐसी घटनाएँ मैंने निजी जिंदगी में देखी हैं।

४-परीक्षा में असफल होना- आज यह कारण नव युवा नवयुवतियों की ही नहीं, बच्चों की जान का ग्राहक बना हुआ है। इसका सबसे बड़ा कारण है- माता पिता द्वारा अत्यधिक मानसिक दबाव व अपमानित करना। मेरे परिचय में सातवीं कक्षा के बच्चे ने इसी कारण से आत्महत्या कर ली। स्कूल की आंतरिक परीक्षा (House Test) में कम नम्बर आने पर बच्चे ने पेपर में नम्बर अपने आप बढ़ा लिए। माँ और बड़ी बहन उस बच्चे को घर छोड़ कर उस पेपर को लेकर स्कूल गए। अपमानित होने के डर से बच्चे ने फांसी लगा ली। जो भी मूर्ख माँ-बाप व अध्यापक मेरे इस लेख को पढ़ रहे हों, उनसे निवेदन है कि अपनी दबी हुई इच्छाएँ व भड़ास अपने बच्चों पर न निकालें। मैंने ऐसे मूर्ख पिता भी देखे हैं जो स्कूल के खेलों में कुश्ती में हारने पर बेटे की जम कर पिटाई करते हैं। सच्चाई यह है कि माँ बाप स्कूल के परिणाम को भी अपनी इज्जत का पैमाना मानते हैं।

कैसे पार पाएं डिप्रेशन से :

डिप्रेशन का सही कारण समझना उसके इलाज को आसान बना सकता है। जैसे कि यदि कोई अपनी नौकरी से परेशान होने की वजह से डिप्रेशन में जा रहा है तो उसके लिए किसी दवाई लेने की जगह कोई अन्य अच्छी नौकरी या रोजगार कहीं ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। यदि आप अकेलेपन की वजह से परेशान हैं तो दोस्तों के साथ वक्त बिताएँ या किसी अच्छी वृत्ति (Hobby) में मन लगाए। जैसे चित्रकारी करना, बागवानी करना, संगीत सीखना आपके लिए ज्यादा लाभदायक हो सकता है। ऐसे में परिस्थितियाँ बदलने मात्र से अवसाद से छुटकारा पाया जा सकता है।

जिस प्रकार अलग-अलग लोगों में डिप्रेशन के लक्षण और कारण अलग-अलग होते हैं, उसी प्रकार इससे पार पाने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं। जो उपाय एक व्यक्ति के लिए काम कर जाये वह दूसरे के लिए भी करे, ऐसा जरूरी नहीं है। और ज्यादातर मामलों में इलाज की कोई एक विधि पर्याप्त नहीं होती। यदि आपको खुद में या आपके किसी शुभचिंतक में अवसाद के लक्षण नजर आते हैं तो चिकित्सकीय विकल्पों के चुनाव में कुछ समय लगाइए। अधिकतर मामलों में सबसे बढ़िया तरीका इन अनेक उपायों का सहप्रयोग होता है। जैसे सामाजिक सहायता, जीवनचर्या में बदलाव, भावनात्मक मजबूती और विशेषज्ञ की सलाह।

यदि आपको लगता है कि आप डिप्रेशन में जा रहे हैं तो इस बात को छुपाइये नहीं, और न ही इसको लेकर हीन महसूस कीजिये, क्योंकि यह एक बहुत ही सामान्य मनोरोग है, इसे छिपाना इसे बढ़ावा देने जैसा है। अपने घर-परिवार में इस पर चर्चा कीजिये, अपने अभिन्न मित्रों से भी सलाह मशविरा कीजिये। यदि कोई न हो तो आप सीधे किसी मनोचिकित्सक से भी मिल सकते हैं।

(चिकित्सा सम्बन्धी विवरण अगले अंक में)

जानते हो!

❒कीर्ति कटारिया

❖ ऊँट और बिल्ली की चलने की शैली समान होती है।
❖ लाल, नीला और हरा प्रकाश के तीन प्राथमिक रंग हैं।
❖ असम की राजधानी दिसपुर है।
❖ रूस में सर्वाधिक सार्वजनिक पुस्तकालय हैं।
❖ ब्रिटेन में यातायात बांये से चलता है।
❖मनुष्य के द्वारा अंतरिक्ष में भेजा गया प्रथम कृत्रिम उपग्रह स्पूतनिक था। यह 4 अक्तूबर, 1957 भेजा गया।
❖पहली बार (20 जुलाई 1969 को) चंद्रमा की सतह पर नील आर्मस्ट्रोंग ने पैर रखे।
❖प्रथम महिला अन्तरिक्ष यात्री वैलेन्तीना तैरेस्कोवा थी?
❖अंतरिक्ष में पहले पहल जाने वाले जानवर लाइका नामक कुतिया थी। (3 नवंबर 1957)
❖प्रथम भारतीय अन्तरिक्ष यात्री राकेश शर्मा हैं।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : आस्था सोनी

❍राकेश– आज मेरे स्कूल की बिजली फेल हो गई।
मोहन– अच्छा कौन सी कक्षा में पढ़ती थी?
❍डॉक्टर– छोटे बच्चे से– बेटा, सुबह शाम खाने से पहले इस दवा के चार चम्मच लेने हैं।
बच्चा– लेकिन हमारे घर में तो तीन ही चम्मच हैं।
❍एक मरीज डॉटर से– मुझे हर चीज दो नजर आती हैं।
डॉक्टर– अच्छा, सामने वाली कुर्सी पर बैठ जाओ।
मरीज– कौन सी पर? दाएँ वाली पर या बाएँ वाली पर?
❍बोलू– देख, रात मैंने तुझे अंधेरे में भी ढूंढ लिया।
घोलू– मास्टर जी तुझे उल्लू ठीक ही तो कहते हैं।
❍शर्मा जी : स्टेशन तक चलने का क्या लोगे?
रिक्शा वाला : १५ रुपए
शर्मा जी : और मेरे सामान का?
रिक्शा वाला : कुछ नहीं।
शर्मा जी : तो फिर ऐसा करो कि मेरा सामान ले जाओ, मैं पैदल आता हूँ।
❍पागल–कहाँ तक पढ़े हो?
दूसरा– एम०ए० तक, पर सोचता हूँ मैट्रिक भी कर डालूँ।
❍एक बार तीन कवि अपनी कविताओं का प्रदर्शन करने के लिए कवि सम्मेलन में गए। कवि सम्मेलन शुरू होने पर एक ने कहा–गणपति बप्पा मोरिया।
दूसरे ने कहा– बाँध बिस्तर बोरिया।
तीसरे ने कहा– कवि सम्मेलन हो लिया।

प्रहेलिका:

❒अनुव्रत आर्य

■वह नाचे आकाश में, चोटी उसकी हाथ में।
■सबको गीत सुनाती, बाँटे यूँ बसंत की पाती।।
■है धरती की रानी, आँचल उसका धानी।।
■रस का मटका, डाल से लटका।
■शेर की मौसी चूहे की फाँसी।
■रात में चमके झिलमिल, जुगनू नाचे हिलमिल।
■मेघ मचावे जोर शोर, उसका नाचे पोर पोर।
■काला काला चोला, काँव काँव बोला।
■पंखे जैसे कान, तू माने या न मान।
■काली काली माँ, लाल लाल बच्चे।
जिधर जाए माँ उधर जाएँ बच्चे।
■एक अनोखी ऐसी गाय,
खाना खाते गाना गाय।।
■चार नरम चार गरम चार बादशाही,
बताने वाले को पेटभर मिठाई।।
■उजली धरती काले मोती, नई प्रेरणा हमको देती।

पतंग, कोयल, घास, आम, बिल्ली, तारे, मोर, कौआ, हाथी, रेलगाड़ी, चक्की, मौसम, पुस्तक

विचार कणिका:

❒प्रतिष्ठा

卐 जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म हैं, वे प्रथम करने में विषतुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश लगते हैं।
卐 जो क्षण और कण को बचाने की कला जानता है वही सन्त है।
卐 उधार देना भारी पत्थर को पहाड़ की चोटी से नीचे धकेलना है और उसे वसूल करना भारी पत्थर को पर्वत पर चढ़ाना है।
卐 चींटी से अच्छा उपदेशक कोई नहीं, और वह मुंह से कुछ नहीं बोलती।
卐 इस ढंग से न खाओ कि मर्ज हो जाए, इस ढंग से न कमाओ कि पाप हो जाए, इस ढंग से न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।
卐 अपनी हानि हो तो भी सबके हित में अपना तन–मन–धन लगाने वाले जन पूजनीय हैं।

जब नेताजी सुभाष जियाउद्दीन बने

नेताजी सुभाष के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान से आप भलीभांति परिचित हैं। वे १९२० से १९४१ तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छाए रहे। इस अवधि में अनेक बार जेल गए। दो बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने। कांग्रेस में नेताओं से कुछ मतभेदों के परिणामस्वरूप यह संस्था छोड़ दी। किन्तु तब भी देशप्रेम और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी रखा।

१९४० के लगभग ब्रिटिश सरकार ने नेताजी को एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया। यह उनकी आखिरी गिरफ्तारी थी। इससे पूर्व वे तीन-चार बार गिरफ्तार हो चुके थे, किन्तु बीमारी के कारण रिहा किए गए। १९४० में भी बीमारी के कारण जेल से रिहा हुए और अपने घर में ही नजरबंद कर दिए गए। इस अवस्था में वे केवल पूजा-पाठ में ही रमे रहते थे, राजनीति या अन्य किसी सांसारिक मामले में इनकी रूचि नहीं रह गयी। किन्तु जनवरी १९४१ में अचानक यह समाचार फैल गया कि सुभाष बोस अपने घर से अचानक गायब हो गए हैं। यह आश्चर्यजनक इसलिए लगा कि इनके घर के इर्दगिर्द भारी पुलिस व्यवस्था थी। अंग्रेज सरकार हैरान थी, परेशान थी और हैरान थे भारतवासी।

नेताजी ने अपना घर कैसे छोड़ा

नेताजी ने अपने भतीजे की मदद से अपना घर छोड़ा। वे कार में बैठकर कलकत्ता से चालीस मील दूर एक स्टेशन से पेशावर की यात्रा पर चल पड़े। सारे देश में उनको ढूंढ़ने के लिए कोशिशें की जा रही थीं प्रत्येक स्टेशन, बस स्टैण्ड इत्यादि पर उनके चित्र लगे थे। अतः उनके लिए पुलिस और आम जनता की आंखों में धूल झोंकना अत्यंत कठिन था, किन्तु कोई इनको पहचान नहीं सका क्योंकि यात्रा के दौरान वे पठानी वेशभषा में थे। दाढ़ी बढ़ी हुई थी और नाम रखा था जियाउद्दीन। सामान्यता किसी से बातचीत नहीं की। अगर बात भी करनी पड़े तो अपने को एक इंशोरेन्स कंपनी का एजेंट बताया। कोई बड़ा स्टेशन आता तो समाचार पत्र पढ़ने का बहाना करके अपने मुंह के आगे समाचार पत्र रख लेते। इस तरह १७ जनवरी, १९४१ को पेशावर पहुंच गए।

कलकत्ता से चलने से पूर्व पूरा प्रबंध कर दिया गया था कि कहां किसके पास ठहरना है। पेशावर में जो इनका सहायक बना, उस व्यक्ति का नाम था रहमत खां। वह पश्तो भाषा जानता था और वहीं का रहने वाला था। उसने सुभाष बोस का नाम जियाउद्दीन किया और बताया कि वे बोलेंगे नहीं अर्थात् गूंगे-बहरे बनकर रहेंगे ताकि उनका भेद न खुल सके।

अनेक कठिनाइयां सहकर रहमत खां की सहायता से सुभाष बोस काबुल पहुंचे। काबुल में एक गंदी-सी सराय में ठहराया गया। यहां कुछ गुप्तचर इनके पीछे लग गये। रहमत खां कुछ रिश्वत देकर इन गुप्तचरों को दूर रखने में सफल हुआ। किन्तु बोस का उद्देश्य तो जर्मनी, इटली या रूस जाने का था। उसकी व्यवस्था नहीं हो पा रही थी। उधर काबुल में छिपकर रहना भी कठिन होता जा रहा था। गुप्तचर इनके पीछे लगे हुए थे। स्थिति यहां तक पहुंची कि गुप्तचर से बचने के लिए सुभाष बोस की घड़ी भी गुप्तचर को दी गयी।

रहमत खां जब अपने प्रयास में सफल नहीं हुआ तब उसने काबुल में रहने वाले एक बड़े व्यापारी उत्तम चन्द की मदद ली। उत्तम चन्द और उसकी पत्नी दोनों ने मिलकर देश के महान सपूत सुभाष बोस की हर प्रकार से मदद की। अब इन कठिनाईयों के बाद सुभाष बोस जर्मनी पहुंचे। कुछ समय जर्मनी रहने के बाद १९४२ में पनडुब्बी के माध्यम से सिंगापुर पहुंचे। वहीं पर आजाद हिन्द फौज का गठन किया। जापानियों से सैनिक मदद ली। सिंगापुर आदि स्थानों पर रहने वाले भारतीयों से आर्थिक सहायता प्राप्त की और तीन प्रसिद्ध नारे दिये: 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' और तीसरा 'जय हिन्द'। आजाद हिन्द फौज की कमान संभाली। उसमें रानी झांसी के नाम से स्त्रियों की भी एक टुकड़ी थी। जापान की हार के साथ आजाद हिन्द फौज को भी सफलता नहीं मिली। अंग्रेज सरकार ने कोना-कोना छान मारा, लेकिन सुभाष बोस को गिरफ्तार नहीं कर सकी। इनके संबंध में एक कवि ने कितना ठीक कहा है:-

बांधे जाते इंसान कभी, तूफान न बांधे जाते हैं
काया जरूर बांधी जाती, बांधे न इरादे जाते हैं।
वो दृढ़ प्रतिज्ञ सेनानी था-जो मौका पाकर निकल गया
वो पारा था अंग्रेजों की, मुट्ठी में आकर फिसल गया।

सुभाष बोस की जिस व्यक्ति ने पेशावर से काबुल तक मदद की और अपना नाम रहमत खां रखा, उस व्यक्ति का वास्तविक नाम भगत राम था और उसके परिवार के सदस्य भी स्वतंत्रता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लेते थे।

भजनावली

ये कौन चित्रकार है!

हरी हरी वसुंधरा पे नीला नीला ये गगन
के जिसपे बादलों की पालकी उड़ा रहा पवन
दिशायें देखो रंगभरी, चमक रही उमंगभरी
ये किसने फूल फूल पे किया सिंगार है
ये कौन चित्रकार है, ये कौन चित्रकार है।

तपस्वियों सी हैं अटल ये पर्वतों की चोटियाँ
ये सर्प सी घूमेरदार, घेरदार घाटियाँ
ध्वजा से ये खड़े हुये हैं वृक्ष देवदार के
गलीचे ये गुलाब के, बगीचे ये बहार के
ये किस कवि की कल्पना का चमत्कार है
ये कौन चित्रकार है!!

कुदरत की इस पवित्रता को तुम निहार लो
इसके गुणों को अपने मन में तुम उतार लो
चमका लो आज लालिमा, अपने ललाट की
कण-कण से झाँकती तुम्हें, छवि विराट की
अपनी तो आँख एक है, उसकी हजार है।।
ये कौन चित्रकार है!!
(यह किसी पुरानी हिन्दी फिल्म का गीत है, लेखक का नाम ज्ञात नहीं है।)

ओ३म् की महिमा

❒प्रो० शामलाल कौशल

ओ३म् की है महिमा न्यारी
ओ३म् पर मैं जाऊं बलिहारी
ओ३म् ही माँ ओ३म् ही बाप,
ओ३म् मिटाए सब संताप।।
ओ३म् है देवों का देव,
ओ३म् जपो तुम सदैव।।
ओ३म् है वेदों का सार,
ओ३म् चेते सारा संसार।।
ओ३म् है अखण्ड अनादि अनूप,
ओ३म् है सच्चिदानन्दस्वरूप।।
ओ३म् से हो शुद्ध अंतःकरण।
ओ३म् बिना ना जीवन मरण
ओ३म् बिना है जीवन अधूरा,
ओ३म् से होता हर यज्ञ पूरा।।
रात दिन ओ३म् ध्याओ,
आवागमन से मुक्ति पाओ

किस भाँति संसार रचा।।

लेखक : स्व० श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल आर्योपदेशक

निर्विकार और निराकार प्रभु जग कैसे साकार रचा।
परम पिता परमेश्वर तूने किस भाँति संसार रचा।।

तारों से भरा नभ का आंगन, सूरज चन्दा कर रहे गमन,
घन घोर घटा करती गर्जन, कहीं शीतल मंद सुगंध पवन।।
यह बिन सीमा का नील गगन, जिसमें पंछी कर रहे गमन,
मिल रहा हमें निशदिन भोजन, हे जगदीश्वर तुम हो धन धन।
कौन सी शक्ति किस वस्तु से, सब कुछ सर्वाधार रचा।१।

कहीं ऊँचे पर्वत वन उपवन, कहीं गहरे सागर करें नमन,
कहीं रेत के टीले औषध अन्न, कहीं हीरे मोती लाल रतन।
कहीं काँटों में खिल रहे सुमन, कहीं महक रहा शीतल चन्दन,
कहीं बोल रहे हैं पक्षीगण, कहीं भौंरों की प्यारी गुनगुन।
कहीं डाली में हैं फूल रचे, कहीं गुल के नीचे खार रचा।२।

कितने सुन्दर हैं क्या कहना, इस मस्तक में हैं दो नयना,
बिन तेल के ही इस दीपक का, चौबीस घंटे जलते रहना।
मुख में दांतों का क्या कहना, रसना भी बोल रही बैना,
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति में भी, सांसों का चलते रहना।
गर्भ के भीतर मानव चोला, बिना किसी औजार रचा।३।

तू अजर अमर तू अविनाशीअन्तर्यामी घट-घट वासी,
सुखकारी वा तू सुखराशी, तू निराकार निर अभिलाषी,
तेरा सुन्दर रूप बहारों में, दिखता रंगीन नजारों में।
सारंगी के मृदु तारों में, और लय स्वर की झंकारों में,
यह जीवन है 'बेमोल' प्रभु जीवन का उत्तम सार रचा।।४।

गीत -राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति (स्व०)

इस धरती पर धार सुधा-
की आओ हम बरसाएँ।

लोभ करें संवरण स्वार्थ का, परहित में अर्पित हो जीवन।
दीन दलित की सुश्रूषा में, सहज समर्पित हो तन-मन।
एक सूत्र में बंधे भूमि यह-नव संसार बसाएं।

भेद-भाव की विकृतियों का, अब हो पूर्ण समापन।
बढ़े एकता में भावों का, शान्ति समन्वित अपनापन।।
नवल रश्मियां ज्ञान-सूर्य-की सत्वर आज उगाएँ।

जगमग ज्योति जले निर्भय- हो मानवता की अविरल।
सुख समृद्धि से आपूरित हों-जो है आज विकल।
मानव मन में मानवता-
का हम आभास कराएं।।

डॉ० विवेक आर्य सम्मानित

आर्यसमाज द्वारका, दिल्ली द्वारा आर्य समाज पेज facebook.com/arya.samaj के एडमिन एवं शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ० विवेक आर्य को सोशल मीडिया एवं लेखन द्वारा वेदों के सिद्धांतों के प्रचार प्रसार में बहुमूल्य यागदान के लिए डॉ० सोमदेव शास्त्री, गुरुकुल पौंधा, देहरादून के आचार्य धनञ्जय जी के करकमलों से सम्मानित किया। दिल्ली सभा के मंत्री श्री विनय आर्य एवं प्रसिद्ध आर्य लेखक मनमोहन आर्य जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आर्यसमाज द्वारका के अधिकारी और सदस्य उपस्थित थे। (वि० प्र०)

धारवाड़ में 'महिला उत्कर्ष एवं बाल विकास : दशा एवं दिशा' पुस्तक का विमोचन सम्पन्न।

डॉ० लता पाटिल एवं डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट द्वारा सम्पादित पुस्तक 'महिला एवं बाल विकास : दशा एवं दिशा' पुस्तक का विमोचन उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान, धारवाड़ (कर्नाटक) के सभागार में देश के विभिन्न राज्यों से आये विद्वज्जन के एक भव्य समारोह में सम्पन्न हुआ। समारोह के अध्यक्षता के० विजयन (संपर्क अधिकारी द० भा० हिन्दी प्रचार सभा धारवाड़) ने की। समारोह के विशेष अतिथि प्रो० एस० के० पवार (प्रोफेसर-हिंदी विभाग कर्नाटक युनिवर्सिटी धारवाड़) थे। अन्य सम्मानित अतिथियों में डॉ० बिष्णु कुमार राय (सहयोगी प्रक्ता केरल- एरनाकुलम), डॉ० नलिनी कुलकर्णी (वरिष्ठ प्राध्यापक धारवाड़, पी जी विभाग दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की प्रबंधक सूचिता जाधव जी, श्री समुन्द्र सिंह सह सम्पादक बोहल शोध मंजूषा थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ० संजय एल० मादार, अध्यक्ष उच्च शिक्षा संस्थान धारवाड ने किया। इस अवसर पर हिन्दी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ० विष्णु राय, डॉ० एस पंवार, डॉ० नलिनी जी को श्रीमती रज्जी देवी नन्दा राम सिहाग साहित्य रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। (वि प्र०)

बलिदान दिवस पर यज्ञ व कवि सम्मेलन

भोपाल सिंह आर्य, मंत्री आर्यसमाज

आर्यसमाज नांगलोई में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान स्मृति में सुबह यज्ञ और शाम को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कवि श्री भारतभूषण आर्य, बिहारीलाल अम्बर, अरविंद पथिक, विवेक गौतम और पदमसिंह राठौर कवियों ने अपनी अपनी कविताओं के माध्यम से श्रोताओं को देश व धर्म का सन्देश दिया। मुख्य अतिथि के पद को श्री हेमचंद भारद्वाज जी ने सुशोभित किया। मंच का संचालन आचार्य अखिलेश आर्य जी ने किया।

आगरा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

-मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

आगरा, होटल श्याम पैलेस, राजा की मंडी में दो दिवसीय स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान स्मृति समारोह सम्पन्न हुआ। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के इस कार्यक्रम में साध्वी पुष्पा सरस्वती जी (रेवाड़ी) व श्री दिनेश पथिक जी (दिल्ली) मुख्य आमंत्रित विद्वानों का सानिध्य रहा। यज्ञ, भजन, प्रवचन की उत्तम व्यवस्था का यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से लाभ प्राप्त किया। अलग-अलग सत्रों में उत्तम कार्यक्रम सम्पन्न हुए। कार्यक्रम आयोजकों व सहयोगियों का ओ३म् पट्टिका भेंटकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर सोम प्रकाश शास्त्री, विवेक शास्त्री, विश्वेन्द्र शास्त्री, महावीर आर्य, सोमव्रत आर्य, अनिकेत आर्य, ज्ञानप्रकाश आर्य, परमवीर व मुकेश कुमार ऋषि वर्मा आदि उपस्थित रहे।

यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह

पं० जयभगवान आर्य, 9991456619

झज्जर, स्वामी शक्तिवेश जी के अनुज पं० जयभगवान आर्य के संयोजन में टीला सिलानी गेट मौहल्ला में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। ब्र० सुभाष आर्य यज्ञ के ब्रह्मा रहे। कु० नम्रता आर्य, देवेन्द्र, विवेक, कुनाल आर्य होनहार बच्चों को वैदिक संस्कार से ओतप्रोत करने के लिये मुख्य यजमान बनाया। ९० वर्षीय मा० पन सिंह जी आर्य कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे। मुख्य वक्ता पं० जयभगवान आर्य, संजय यादव खेड़ी खुम्मार, श्री चन्द्रपाल जहाजगढ़ माजरा, प्रा० द्वारका प्रसाद, आर्यसमाज झज्जर प्रधान, भगवान सिंह आर्य, ओमप्रकाश शर्मा सुहरा, रामकरण कलोई, ओमप्रकाश यादव, चमनलाल यादव, श्रीमती रोशनी देवी आदि रहे। पं० जयभगवान आर्य ने कहा वैदिक ज्ञान सत्य पर आधारित विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। जो व्यक्ति वैदिक सिद्वान्तों को मन, वचन, शरीर से आचरण में लाता है, उसका सर्वांगीण विकास होता है। संजय यादव ने बताया कि निष्काम भाव से परोपकार करने से जीवन सफल होता है। जिसकी कथनी में कोयल सी चहक, करणी में फूलों सी महक होती है, उसे ईश्वर का आनन्द मिलता है। सर्वश्री लाला रामअवतार, मामन सैनी, रतीराम आर्य, पं० रामकिशन दीक्षित, रामोतार दीक्षित, आत्माराम, शिवचरण आदि उपस्थित रहे। सक्रिय कार्यकताओं को वैदिक साहित्य भेंट किया गया। पं० वेदप्रिय आर्य और भूराजप्रिय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया।

चौधरी बदलूराम आर्य (मुकलान) हरियाणा सरकार द्वारा सम्मानित

आर्यसमाज के वयोवृद्ध संगठनकर्त्ता और नेता चौधरी बदलूराम आर्य (मुकलान) को कुरुक्षेत्र में 'सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, हरियाणा द्वारा आयोजित 'राज्य स्तरीय वरिष्ठ नागरिक सम्मान समारोह' में समाज में व्याप्त विभिन्न बुराइयों जैसे- नशाखोरी, छुआछूत, बालविवाह, दहेजप्रथा, मृत्युभोज के खिलाफ आर्यसमाज और खाप-पंचायतों के माध्यम से अभियान चलाने व वृद्धों के कल्याण, गौ-रक्षा, बेटियों की शिक्षा व उनके कल्याण के लिए उनके योगदान को देखते हुए 'वरिष्ठ नागरिक राज्य पुरस्कार योजना' के अन्तर्गत वर्ष २०१८-१९ के लिए 'शतवर्षीय पुरस्कार' प्रदान किया गया, जिसके अन्तर्गत उन्हें एक प्रशस्ति-पत्र, शाल व ५०,००० (पचास हजार रुपये) का नकद पुरस्कार दिया गया। ज्ञातव्य है कि चौधरी बदलूराम आर्य ने अपना पूरा जीवन आर्यसमाज के माध्यम से समाज को ऊँचा उठाने में आहुत कर दिया है। आप लम्बे समय से आर्यसमाज की भजनमण्डलियों और विद्वानों की टीम को लेकर गांव गांव में समाज सुधार की अलख जगाते रहे हैं। आपने जिला वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष के रूप में और हरियाणा के प्रसिद्ध आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार के प्रधान के रूप में भी उल्लेखनीय सेवाएँ दी हैं। पूरे समाज को ऐसे यशस्वी बुजुर्ग पर गर्व है। हम सभी की तरफ से उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घयुष्य के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

Re-establishment of Arya Samaj missionary work at Ponnani, Malappuram District of Kerala

By KM Rajan

During the infamous 1921 Khilafath Movement, Malappuram district was witnessed with worst atrocities on Hindus. Thousands of people were looted, massacred, women were raped and mass forcible conversion were also held. On hearing this horrible news, Punjab Arya Prathinidhi Sabha has deputed Mahathma Hansraj Ji, Pt. Rishiram Ji, Swami Shradhanand Ji etc.to carryout rehabilitation works at Kerala. As part of that mission Bharatheey Hindu Shudhi Sabha has opened an office at Ponnani, one of the worst riot affected place in Malappuram district. Thousands of people were rescued and brought back to Vedic Dharma at this Arya Samaj Centre at Ponnani. This Arya Samaj served a commendable humanitarian service for few years. Later on the work was stopped and the building was occupied by some locals and they continued to stay there till recently. During the recent flood in Kerala, the building was totally collapsed. A board clearly mentioned as 'Bharatheey Hindu Shudhi Sabha' was placed in front of that building till few months back also.

Arya Samajam Vellinezhi, Palakkad started re-establishment of the Arya Samaj work at Ponnani on 25 Dec 2018 (Swami Shradhanand Balidan Divas) with the support of few local Aryas. A Brihath Agnihithra and Swami Shradhanand martyrdom day commemorative function was held at Dayananda Vidyamandir, a school adjacent to this historical place on 25 Dec 2018. Swami Ashuthosh Ji Parivarajak (Rojad, Gujarath) hoisted the Arya Flag there after the yagya and formally started the re-activation work at Ponnani Arya Samaj. Sri.Baleswar Muni Ji (Delhi), Sri.KM Rajan (Shudhi Pracharak of Kerala), Acharya Vamdev Arya Ji (Upacharya, Veda Gurukulam, Karalmanna, Kerala) and many Hindu leaders of Kerala took part in this function. This land said to be belongs to Bharatheey Hindu Shudhi sabha. But presently it is in the control of Calicut Arya Samaj and they are not doing any activities there. I Request the Shudhi Sabha to send a team to Kerala and verify the matter and support us to continue the Veda prachar mission at the same place.

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में

पूज्य आचार्य बलदेव स्मृति की पर आयोजित

स्मृति शेष

आचार्य बलदेव जी

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 27 जनवरी 2019

समय प्रातः 9 बजे से

स्थान - दयानन्द मठ, रोहतक

आप सभी सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्क सूत्र- 8901387993, 9416874035, 9416503513, 9991996339

प्रो0 रामप्रताप

हेमन्तप्रताप

ओ३म्

फोन : 9416434541

9416319663

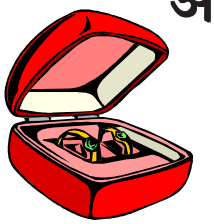

श्री गणेशीलाल लाल आभूषण केन्द्र

आधुनिक डिजायनों में शुद्ध सोने व चांदी के आभूषणों के विश्वसनीय निर्माता

मेन बाजार, ग्राम पोस्ट पाल्हावास

जिला रेवाड़ी

जेएनयू में -- पृष्ठ १३ का शेष

जाइए तो अहिल्याबाई कोई नहीं कहता, माता शब्द लगाते हैं। मैं वहां एक कार्यक्रम में गया था, किसी के मुख से नहीं सुना अहिल्याबाई। माता अहिल्याबाई ही सुना। इतना गौरव जिन्होंने ऐसी कठिन परिस्थितियों में स्थापित किया, वे नहीं होते तो हम अब जीवित रहते क्या? हमारे जीने के कारण ही वही हैं। यह नेहरु विश्वविद्यालय भी उन्हीं के कारण से तो है। चाहे कोई भी फलाना ढिकाना कोई होता रहे, चाहे गोपाल मीनन हो या और कोई मीनन। चाहे थापर हो या और कोई नगर हो।

बहुत कुछ आपने छत्रसाल जी के बारे में सुना। मैंने तो सोचा था थोड़ी सी कविता उनकी है, उन्होंने (भूषण कवि) कह दिया-

'साहू को सराहूं या सराहूं छत्रसाल को।'

शिवा बावनी तो उन्होंने लिखी ही, किंतु छत्रसाल जी के बारे में भी उन्होंने कुछ लिखा है और भाव वही हैं। मैंने तो एक बार बहुत दिन के बाद कहा कि भाई शिवा बावनी मुझे लाकर दो पढ़ने के लिए। बहुत कठिनाई से लखनऊ वालों ने प्रकाशित की थी, तब मुझे मिली। उसी में परिशिष्ट के रूप में छत्रसाल के संबन्ध में जो उन्होंने रचनाएं कीं वे भी पढ़ने को मिलीं। आप छत्रसाल को पढ़ें, 'बलमुपास्स्व' बल की उपासना करें। 'अग्निमीळे पुरोहितम्' अग्नि की उपासना करें। परमात्मा आपको शक्ति दे।

मनुष्य जीवन -- पृष्ठ २३ का शेष

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्।।

यमाचार्य आत्मज्ञान का उपदेश देते हुए नचिकेता को कहते हैं कि सब वेद उस ब्रह्म का ही वर्णन करते हैं। सभी तपों का अनुष्ठान भी उसी ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किया जाता है। विद्वान् लोग जिसकी इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य आश्रम के नियमों का पालन करते हैं उस वाच्यवाचकरूप एक ओम् पद को संग्रहेण संक्षेप से कहता हूँ। उस ब्रह्म का 'ओम्' निजनाम है। इसी नाम से योगाभ्यास करने वालों को नित्य उपासना करनी चाहिए। जो सब आनंदों से युक्त, सब दु:खों से रहित सर्वशक्तिमान परब्रह्म है, जिसके नाम ओम् आदि हैं, उसी की प्राप्ति कराने में सब वेद प्रवृत्त हो रहे हैं। उसकी प्राप्ति के आगे किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नही है। सब सत्यधर्म के अनुष्ठान, अनेक प्रकार के तप सभी आश्रमों के सत्याचरण रूपी कर्म तथा इस मनुष्य जन्म में प्राप्त करने योग्य परब्रह्म ही है। यही संसार सागर से पार होने के लिए उत्तम नौका है, उसी को प्राप्त कर संसार सागर से जीव तर जाता है।

घर बैठे संस्कृताध्ययन का सुअवसर

उच्चारण-शुद्धि, सामान्य-संस्कृत,
पाणिनीय व्याकरण (अष्टाध्यायी),
दर्शन-शास्त्र आदि विषयों की कक्षाएं
इन्टरनेट (स्काइप) पर चलती हैं।

अध्ययन के इच्छुक सम्पर्क करें-

आचार्य सत्यवान् आर्य,
दूरभाष एवं वट्स एप संख्या-: 9467248777

यः सेतुरीजानामक्षरं ब्रह्म यत्परम। अभयं तितीषेताम्पारं नचिकेतेथं शकेमहि।। कठ २/१५

जैसे नदी आदि जलाशय के पार जाने को पुल बनाया जाता है, वैसे ही संसारी दु:खों से पार होने की इच्छा करते हुए पुरुषों को उचित है कि इन्द्रियों को अपने वश में करके आत्मा के अनुकूल आचरण करें। जो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि के वशीभूत हुआ आत्मा से विरुद्ध आचरण करता है वह कल्याण का पात्र नहीं हो सकता ।

परमात्मा उत्पत्ति विनाश धर्म वाले अनित्य शरीरों में स्थित हुआ भी उन शरीरों के नाश होने में आप नष्ट नहीं होता। यद्यपि परमात्मा व्यापक होने से सब जगत् में अवस्थित है, तो भी शुद्धान्त:करण वाले मनुष्यों के चेतन शरीरों में ही प्राप्त हो सकता है। जैसे शुद्ध दर्पण में मुख की छाया दिखती है, उसी प्रकार जब अन्त:करण ठीक प्रकार शुद्ध हो जाता है तभी परमात्मा का स्वरूप भासित होता है। मनुष्य उस व्यापक ब्रह्म को जानकर ही कल्याण प्राप्त कर सकता है अन्यथा नहीं । कठोपनिषद् में यमाचार्य ब्रह्म प्राप्ति के लिए इन्द्रिय आदि साधनों सहित शरीर को रथ रूप से वर्णन करते है:- आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिन्तु सारथिं विद्धि मन: प्रग्रहमेव च।। अर्थात् तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी और शरीर को रथ जानो। बुद्धि को सारथि अर्थात् रथ को चलाने वाला तथा इन्द्रियों को घोड़े और संकल्प विकल्प करने वाले मन को लगाम की रस्सी जानो। बुद्धि रूपी सारथि, मन रूप लगाम को पकड़े हुए इस शरीर रूपी रथ को चलाता है। यदि बुद्धि रूपी सारथी विचारशील है तो रथ के स्वामी आत्मा को अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँचाने में समर्थ हो जाता है अन्यथा घोड़े रूपी इन्द्रियों से विषयों में शरीर रूप रथ भ्रमाया जाता रहेगा और बुद्धि द्वारा मन को वश में किए बिना यह शरीर रूपी रथ आत्मा को अपने लक्ष्य पर पहुँचाने से पहले ही टूट कर नष्ट हो जायेगा। ❐❐❐

देशभक्ति (पृष्ठ १० का शेष)

के लिए बनाई गयी कोई व्यवस्था अंतर्राष्ट्रीयता को जन्म देती है। विश्व बंधुत्व की भावना का पर्याप्त उल्लेख वेदों में स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होता है। सब प्राणी एक ही परमात्मा की संतान होने के कारण परस्पर भाई-भाई हैं, सारी पृथ्वी एक समान माता है व सारा मानव समाज एक परिवार है।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।। ऋ- १०/१९१/४

अर्थात हे मनुष्यों! तुम सबके संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय मिले हुए हों, तुम्हारे मन समान रूप से निर्मल तथा परस्पर मानयुक्त हों, जिससे तुम्हारा प्रेमपूर्ण सहयोग व सह-अस्तित्व हो सके।

एक विश्व शासन की आवश्यकता

वेदों में एक साम्राज्य व चक्रवर्ती राज्य का विचार कई स्थानों पर आया है। 'चक्रवर्ती राजा'- यह शब्द तो वेदों में नहीं मिलता किन्तु सम्राट्, एक राष्ट्र, साम्राज्य आदि शब्द कई मन्त्रों में पाये जाते हैं।

इन उद्धरणों से उन लोगों को, जो साम्राज्यवाद (Imperialism) के विरुद्ध भाषण और नारे सुनने के अभ्यस्त हैं, कुछ आश्चर्य होगा। क्या वेदों में भी आजकल के साम्राज्यवाद का प्रतिपादन है जो अत्याचार और स्वच्छंद शासन का प्रतीक है। यह तो बड़ी आक्षेप योग्य बात है। इस विषय में निवेदन है कि जिस साम्राज्य की निंदा यथार्थ है, वह पाशविक बल से दूसरों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध लादा हुआ शासन है। उदाहरणार्थ महाभारत के समय युधिष्ठिर से पूर्व जरासंध भारत के एक बड़े भाग का सम्राट् था। उसके साम्राज्य का साधन था पाशविक बल।

योगिराज श्री कृष्ण के अपने जीवन का लक्ष्य भारत को जरासंध के फंदे से छुड़ाना था। उन्होंने उसे आर्य साम्राज्य या दूसरे शब्दों में आत्म-निर्णय के मौलिक सिद्धांत पर आधारित भारतवर्ष के छोटे-बड़े- एक राष्ट्र, बहुराष्ट्र, संघ श्रेणी, सभी प्रकार के राष्ट्रों के संगठन (Common Wealth) की छत्रछाया में लाना निश्चित किया। यह वह गुरुभार था जिसके वहन का बीड़ा श्रीकृष्ण ने उठाया।

साम्राज्य शब्द महाभारतादि में दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। इसका एक अर्थ तो वही है जो अंग्रेजी शब्द Empire का। इसमें कई राज्य मिलकर किसी महान सम्राट के अधीन होते हैं। ऐसा साम्राज्य जरासंध का था, जैसे कि ऊपर दिखाया गया है। साम्राज्य शब्द का एक और अर्थ है जिसे अंग्रेजी में Common Wealth व राज्य संघ शब्द से प्रकट किया जाता है। इसके उदाहरण के तौर पर धर्मराज युधिष्ठिर के साम्राज्य को ले सकते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि वेदों में जिस साम्राज्य का निर्देश है, वह उच्छृंखल स्वच्छन्द शासन नहीं, जिसकी Imperialism के नाम पर निंदा की जाये। यह स्वेच्छा से अनेक राज्यों व संघों का धर्म रक्षार्थ और सारी प्रजा के हित के लिए स्थापित राज्य है। इसे अंग्रेजी के शब्दों में Empire नहीं, Common Wealth Nation कह सकते हैं।

वर्तमान काल के अनेक भारतीय और पाश्चात्य मनीषियों ने संसार के सब पक्षों के परस्पर सहयोग के आधार पर विश्व शासन व World Government की कल्पना की है। इस विश्वसंघ के विषय में एक अंग्रेजी के कवि की निम्नलिखित सुंदर हृदयंगम रचना के साथ लेखक ने अपने विश्वसंघ विषयक लेख का उपसंहार किया है जो उल्लेखनीय है। यह किस कवि की रचना है यह पता नहीं।

"These things shall be, a loftier race,
Than e'er the world hath known shall rise,
With flames of freedom in their souls,
And light of knowledge in their eyes,
Nation with nation, land with land,
Unarmed shall live as comrades free,
In every heart and brain shall throb,
The pulse of one fraternity."

अब तक संसार ने जितना कुछ जाना है उससे उच्चतर मानव जाति प्रादुर्भूत होगी। जिसकी आत्माओं में स्वतंत्रता की ज्वाला प्रदीप्त होगी और जिसके नेत्रों में ज्ञान की ज्योति होगी। राष्ट्र के साथ राष्ट्र, देश के साथ देश बिना शस्त्रों के परस्पर स्वतंत्र मित्र और साथी के समान रहेंगे। एक भ्रातृभाव व बंधुता का स्पंदन प्रत्येक मस्तिष्क और हृदय में होगा।

भगवान करे कि इस कवि की उच्च भावना शीघ्र ही संसार में मूर्त रूप धारण करे। किन्तु यह तभी होगा जब लोग विश्व प्रेम और परस्पर हार्दिक सहयोग विषयक वैदिक भावनाओं को पूर्णतया क्रियात्मक रूप देंगे। संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में केवल वेद ही हैं जो 'वसुधैव कुटुम्बकं' की भावना से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उदघोष करते हैं।

संरक्षक-दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल
प्रधान-आर्य समाज, सफदरजंग एन्कलेव
मंत्री-वेद संस्थान, राजौरी गार्डन
ईमेल- ravidev@ekal.org

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

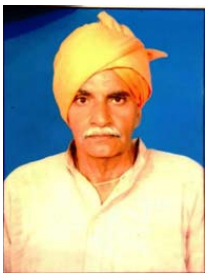

❖सबसे बुरा नशा ऐश्वर्य पाकर होता है जो तब तक नहीं उतरता जब तक मनुष्य पूरी तरह भ्रष्ट नहीं हो जाता। –महात्मा विदुर

❖हम विलासी और अकर्मण्य बनकर अपनी आत्मा को संतुष्ट नहीं रख सकते। –मुंशी प्रेमचंद

❖'शिकायती गली' को छोडकर 'धन्यवाद मोहल्ले' में रहने लगो, फिर सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। –स्वेट मार्डन

❖कष्ट यदि हँसते–२ सहन किया जाए तो यह भी सुखद हो जाता है। –अरस्तु

❖संसार मानो दूध और जल का मिश्रण जैसा है। उसमें ईश्वरीय आनन्द और विषय दोनों हैं। तुम हंस बनकर दूध–दूध पी लो और पानी छोड़ दो। –रामकृष्ण परमहंस

❖आध्यात्मिक दु:ख का निवारण ज्ञान से, आधिभौतिक दु:ख का निवारण कर्म से एवं आधिदैविक दु:ख का निवारण उपासना से संभव है।

❖आत्मनिरीक्षण से पहले मनुष्य अपने आप को गुणों का भण्डार और दूसरों को अवगुणों का आगार समझता है। आत्मनिरीक्षण करने के पश्चात् मनुष्य अपने को अवगुणों का आगार और दूसरों को गुणों का भण्डार समझने लगता है।

❖सौन्दर्य के साथ सद्गुण भी हों तो वह हृदय का स्वर्ग है, यदि उसके साथ दुर्गुण हों तो नरक है।

❖दूसरों में आग पैदा करने के लिए खुद को जलना पड़ता है।

❖एक पल का क्रोध पूरा जीवन बिगाड़ सकता है।

❖घड़ी में समय देखने की सार्थकता तभी है जब समय पर चलने का प्रयास किया जाए।

शांतिधर्मी के पाठकों से निवेदन

सम्मान्य पाठकगण, यह आपके आत्मीय सहयोग से ही सम्भव हुआ है कि शांतिधर्मी नियमित प्रकाशन के २० वर्ष पूर्ण कर रहा है। हम पूरी सावधानी से हर मास सभी पते जाँच कर पत्रिका डाक में प्रेषित करते हैं। कुछ पाठकों को पत्रिका नहीं मिल पाती है। इस समस्या से हम परिचित हैं। हम डाक विभाग को सुधार नहीं सकते हैं। तथापि आपसे निवेदन करते हैं कि–

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/– होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/– जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

३ २००४ से पूर्व के आजीवन सदस्यों को हम निरन्तर पत्रिका भेज रहे हैं। परन्तु उनसे हमारा प्राय: कोई सम्पर्क नहीं हो पा रहा है। उन्हें पत्रिका मिल रही है या नहीं, या उनके लिये इसकी कोई उपयोगिता भी है या नहीं? इसलिये उन मान्य पाठकों से प्रार्थना है कि अपने पते की पुष्टि हमारे ईमेल, व्हाट्स एप पर या फोन द्वारा शीघ्र करने का कष्ट करें। पते की पुष्टि न होने पर हम उन्हें २१ वें वर्ष (फरवरी १९ से) पत्रिका नहीं भेज पायेंगे।

४ अभी वार्षिक शुल्क १२०/– तथा १०००/– दस वर्ष का शुल्क है। फरवरी २०१९ से इसमें वृद्धि संभव है।

आशा है आपका स्नेह बना रहेगा, और हम इस कार्य को और अधिक उत्साह से कर पायेंगे।

भवदीय **सहदेव समर्पित** सम्पादक शांतिधर्मी
पोस्ट बॉक्स नम्बर 19, मुख्य डाकघर जींद–126102

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, गोहाना मार्ग रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

चौपाल संस्था और हरियाणा संस्कृत अकादमी द्वारा आयोजित भाषण एवं गीता संवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत इंडस पब्लिक स्कूल जीन्द के विद्यार्थी। प्रतिष्ठा व आस्था ने भाषण प्रतियोगिता में प्रथम व तृतीय तथा संवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

पं० जयभगवान आर्य के संयोजन में टीला सिलानी गेट मौहल्ला में वैदिक यज्ञ, भजन, प्रवचन, अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। ब्र० सुभाष आर्य यज्ञ के ब्रह्मा रहे।

शांतिधर्मी परिसर में आयोजित पूर्णिमा महोत्सव में यज्ञ। सम्बोधित करती हुई बहन उषा आर्या

नारनौल में यज्ञ। उपस्थित जनों को यज्ञ का महत्व बताते हुए श्री पुरुषोत्तम आर्य।

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (जनवरी, २०१६) P.R. No. : PKL 150-A/2017-19

॥ ओ३म् ॥

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

शिवालिक गुरुकुल

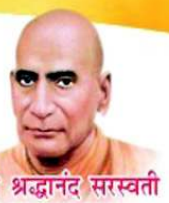

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती
(गुरुकुल शिक्षा के विस्तारक)

भारतीय संस्कृति के साथ आपके बच्चे का उज्ज्वल भविष्य

सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम (केवल लड़कों के लिए)

प्रवेश सूचना

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से नौवीं तक
2019-20

"शिक्षा, सुरक्षा, संस्कार और सेवा"
इन चार उद्देश्यों के साथ गुरुकुल का संचालन किया जा रहा है।

विद्यार्थी जीवन ज्ञान एवं शक्ति के संचय का काल है। यथार्थ ज्ञान के बिना किसी भी प्रकार के सुख की प्राप्ति कल्पना मात्र है। प्राचीन काल में बालक के चहुँमुखी विकास के लिए माता-पिता श्रेष्ठ गुरुओं के कुल (गुरुकुल) में अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराते थे, जहाँ सम्पूर्ण विद्याओं का पठन-पाठन एक ही स्थान पर उपलब्ध होने से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता था। कुछ शिथिलताओं के चलते कालान्तर में इसका स्वरूप परिवर्तित होता गया। वर्तमान काल में भी यदि हम अपने बच्चों का एक ही स्थल पर सम्पूर्ण विकास करना चाहते हैं, तो वह राष्ट्रीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही संभव है। इस चिन्तन को साकार रूप देने के लिए शिवालिक शिक्षण संस्थान समूह ने ऋषियों की इस प्राचीन प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के साथ सुरक्षा, संस्कार और सेवा इन चार उद्देश्यों को सुनियोजित कर राष्ट्र व छात्रों की सर्वोन्नति के लिए शिवालिक गुरुकुल (Shivalik Gurukul) का संचालन किया जा रहा है।

प्राचार्य : शिवालिक गुरुकुल

FEATURES

- Ultra Modern Fully Airconditioned Hostel with Stern supervision by wardens & CCTV (24x7)
- Horse Riding, Skating & Gun Shooting • Separate Coach for Games • Campus in 16 Acres
- Special Focus on Moral Values • Experienced & Dedicated Staff • Lush Green Play Ground.

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala (Haryana) • **E-mail :** shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 8813061212, 8901140225 • **Website :** www.shivalikgurukul.com